



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



दीप्ति शर्मा ने रचा इतिहास

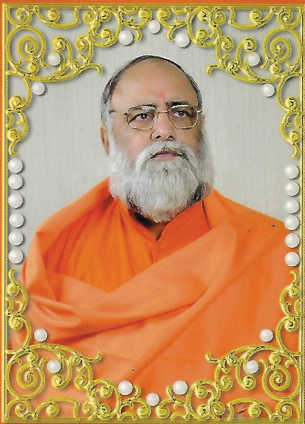
सोमवार, 03 नवंबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 15 • मूल्य: 5 रुपए



सारे चक्रों को जागृत किया
गुरुदेव जी ने

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



दिव्य पाठ से भक्ति, मुक्ति, संतान, अर्थ, काम
सहित हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण की जा
सकती हैं। यह तथ्य पूरी तरह शास्त्रोक्त है।

जिन असाध्य रोगों का इलाज इस जगत में नहीं
है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस
तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ
स्वीकार कर रहा है।

प्रभु कृपा के आलोक से निर्धनता को सम्पन्नता
में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में
मां लक्ष्मी की कृपाओं का वास है।

47 साल का इंतजार खत्म भारत की बेटियों ने रचा इतिहास, पहली बार जीता वनडे वर्ल्ड कप

@ भारतश्री ब्यूरो

भारत की महिला क्रिकेट टीम ने वह कर दिखाया, जिसका सपना कई पीढ़ियों से देखा जा रहा था। रविवार को डीवाई पाटिल स्टेडियम में भारत ने साउथ अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार महिला वनडे वर्ल्ड कप अपने नाम कर लिया। यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि भारतीय महिला क्रिकेट की आत्मा और संघर्ष की कहानी है। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 7 विकेट पर 298 रन बनाए। जवाब में साउथ अफ्रीका की टीम 246 रन पर सिमट गई। इस ऐतिहासिक मुकाम के पीछे 21 वर्षीय शेफाली वर्मा, जिन्होंने पहले 87 रन की शानदार पारी खेली और बाद में गेंद से दो अहम विकेट लेकर मैच का रुख मोड़ दिया। उन्हें 'प्लेयर ऑफ द फाइनल' चुना गया।

शुरुआत में मजबूत नींव, मंधाना और शेफाली की चमक

साउथ अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। भारत के लिए स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा ने शानदार शुरुआत की। दोनों ने मिलकर पहले विकेट के लिए सौ से ज्यादा रन जोड़े। मंधाना 45 रन बनाकर आउट हुई, लेकिन तब तक भारत मैच पर पकड़ बना चुका था। इसके बाद शेफाली ने जेमिमा रोड्रिग्स के साथ साझेदारी करते हुए 62 रन और जोड़े। जब वे 87 रन बनाकर आउट हुई, तब स्टेडियम में खामोशी छा गई, लेकिन हरमनप्रीत कौर और दीप्ति शर्मा ने फिर मोर्चा संभाला। दीप्ति ने एक बार फिर अपने अनुभव का परिचय दिया और 58 रन की पारी खेली।

दीप्ति और ऋचाने दी आखिरी ओवरों में रपटार

245 के स्कोर पर भारत के पांच विकेट गिर चुके थे। इस वक्त टीम को तेज रन चाहिए थे। दीप्ति शर्मा और ऋचा घोष ने मिलकर खेल की दिशा बदल दी। ऋचा ने 24 गेंदों में 34 रन बनाकर टीम को 300 के करीब

पहुंचाया। भारत ने 50 ओवर में 298 रन बनाए, जो वर्ल्ड कप फाइनल के लिहाज से बड़ा स्कोर था।

साउथ अफ्रीका की मजबूत शुरुआत, लेकिन भारत की गेंदबाजी ने पलटा खेल

लक्ष्य बड़ा था, फिर भी साउथ अफ्रीका की कप्तान लौरा वोल्वार्ट ने अकेले दम पर संघर्ष किया। उन्होंने लगातार दूसरा शतक लगाया, लेकिन जब वे आउट हुई, तब मैच पूरी तरह भारत की झोली में चला गया। दीप्ति शर्मा ने अपने स्पेल में पांच विकेट झटके और विरोधी टीम को टिकने नहीं दिया। शेफाली ने दो विकेट लेकर अंतिम उम्मीदों पर पानी फेर दिया। साउथ अफ्रीका की टीम 246 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। पूरे टूर्नामेंट में ऑलराउंड प्रदर्शन करने के लिए दीप्ति शर्मा को 'प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट' चुना गया। उन्होंने 13 विकेट लेने के साथ 250 से ज्यादा रन भी बनाए। शेफाली वर्मा को फाइनल में शानदार प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द फाइनल' का अवॉर्ड मिला।

47 साल का लंबा इंतजार और 25 साल बाद नई चैंपियन

महिला वनडे वर्ल्ड कप की शुरुआत 1973 में हुई थी, लेकिन भारत ने पहली बार 1978 में हिस्सा लिया। इसके बाद कई मौके आए, जब टीम करीब पहुंची, लेकिन ट्रॉफी नहीं जीत पाई। 2005 में भारत पहली बार फाइनल में पहुंचा, पर ऑस्ट्रेलिया से हार गया। 2017 में इंग्लैंड ने फाइनल में मात दी। लेकिन इस बार टीम ने वही गलती नहीं दोहराई। 47 साल बाद भारत ने आखिरकार वो मुकाम हासिल किया, जो अब तक सपना था। यह महिला टीम की किसी भी फॉर्मेट में पहली ICC 25 साल नई टीम ने वर्ल्ड कप पहले 2000 में

न्यूजीलैंड ने चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया था।

हरमनप्रीत कौर बनीं नई इतिहास रचने वाली कप्तान

हरमनप्रीत कौर अब उस खास क्लब में शामिल हो गई हैं, जिसमें कपिल देव, एमएस धोनी और रोहित शर्मा जैसे दिग्गज शामिल हैं। कपिल देव ने 1983 में भारत को वनडे वर्ल्ड कप जिताया, धोनी ने 2007 में टी20 और 2011 में वनडे वर्ल्ड कप, जबकि रोहित शर्मा ने 2024 में टी20 ट्रॉफी जीती थी।

हरमनप्रीत ने अब महिला वनडे वर्ल्ड कप भारत की झोली में डाला। नॉकआउट चरण में उन्होंने 331 रन बनाए, जो किसी भी खिलाड़ी द्वारा वर्ल्ड कप नॉकआउट में सबसे ज्यादा रन हैं। इस मामले में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया की बेलिंडा क्लार्क को पीछे छोड़ा। स्मृति मंधाना भी टूर्नामेंट की सबसे ज्यादा रन बनाने वाली भारतीय खिलाड़ी बनीं। उन्होंने 434 रन बनाए।

टीम इंडिया को मिली अब तक की सबसे बड़ी प्राइज मनी

विजेता टीम को 39.55 करोड़ रुपए की पुरस्कार राशि मिली, जो महिला क्रिकेट इतिहास में सबसे बड़ी रकम है। यह रकम 2023 के पुरुष वर्ल्ड कप की प्राइज मनी से भी ज्यादा है, जब ऑस्ट्रेलिया को लगभग 33 करोड़ रुपए मिले थे। उपविजेता साउथ अफ्रीका को लगभग 19.77 करोड़ रुपए की राशि दी गई। इस जीत के पीछे कुछ ऐसी कहानियां हैं, जो टीम इंडिया की हिम्मत को परिभाषित करती हैं। जेमिमा रोड्रिग्स को खराब फॉर्म के कारण शुरुआती मैचों में बाहर कर दिया गया था। लेकिन उन्होंने सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ नाबाद 127 रन बनाकर टीम को फाइनल तक पहुंचाया। शेफाली वर्मा को भी एक साल पहले वनडे टीम से ड्रॉप किया गया था। इस बार उन्हें चोटिल खिलाड़ी की जगह रिप्लेसमेंट के तौर पर बुलाया गया। उन्होंने फाइनल में बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन कर टीम को पहली ट्रॉफी जिता दी।





ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



दिल्ली की हवा में घुला ज़हर, सुप्रीम कोर्ट ने कसा थिकंजा

दीवाली के बाद वायु गुणवत्ता खतरनाक स्तर पर; कोर्ट ने पूछा - सीएक्व्यूएम ने अब तक क्या कदम उठाए? मॉनिटरिंग स्टेशन बंद मिले तो अदालत ने जताई नाराजगी

@ शोभित यादव

दिल्ली-एनसीआर की हवा इन दिनों ज़हर बन चुकी है। सर्दी का मौसम अभी ठीक से शुरू भी नहीं हुआ और प्रदूषण का स्तर पहले ही “गंभीर” श्रेणी में पहुँच गया है। आसमान में धुंध की परत, सड़कों पर जलन भरी हवा और लोगों की आँखों में चुभन ये तस्वीर अब दिल्ली की पहचान बन गई है। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) से सख्ती से जवाब माँगा है कि आखिर प्रदूषण रोकने के लिए अब तक क्या ठोस कदम उठाए गए हैं। मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई और जस्टिस के. विनोद चंद्रन की पीठ ने साफ कहा कि अधिकारी सिर्फ हालात बिगड़ने के बाद हरकत में न आएँ, बल्कि पहले से तैयारी करें ताकि राजधानी की हवा सांस लेने लायक बनी रहे।

सुप्रीम कोर्ट का सख्त रुख

सुनवाई के दौरान अदालत की एमिकस क्यूरी (न्यायिक सलाहकार) वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह ने एक चौंकाने वाली बात सामने रखी। उन्होंने बताया कि दीवाली के दौरान जब प्रदूषण चरम पर था, तब दिल्ली के 37 एयर क्वालिटी मॉनिटरिंग स्टेशनों में से केवल 9 ही सही ढंग से काम कर रहे थे। सिंह ने कहा, “अगर मॉनिटरिंग स्टेशन ही बंद रहेंगे तो यह कैसे तय किया जाएगा कि ग्रेडेड रिसॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) कब लागू करना है?” इस पर कोर्ट ने नाराजगी जताई और कहा कि आयोग को बताना होगा कि गंभीर स्थिति बनने से पहले कौन-से एहतिथायी कदम उठाए जा रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने सीएक्व्यूएम से एक विस्तृत हलफनामा (शपथ पत्र) दाखिल करने को कहा है जिसमें यह बताया जाए कि अब तक क्या किया गया है और आगे क्या करने की योजना है।

दिल्ली की हवा का हाल

आनंद विहार में AQI	अक्षरधाम में AQI
370	369
जहांगीरपुरी में AQI	वजीरपुर में AQI
324	328

आयोग की भूमिका पर उठे सवाल

दिल्ली-एनसीआर के प्रदूषण नियंत्रण की जिम्मेदारी वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) पर है, लेकिन हर साल की तरह इस बार भी कार्रवाई सिर्फ औपचारिकता तक सीमित दिखती है। कोर्ट ने कहा कि हर साल नवंबर आते ही स्कूल बंद करने, निर्माण रोकने और वाहनों की पाबंदियों जैसे “आपात उपाय” लागू किए जाते हैं, जबकि जरूरत इस बात की है कि पहले से ऐसी तैयारी हो कि स्थिति आपातकालीन न बने। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह केवल रिएक्शन की बात नहीं है, बल्कि प्लानिंग की बात है। अगर हर साल एक जैसी स्थिति बनती है, तो इसका मतलब है कि तैयारी में कमी है।

प्रदूषण की असली वजहें

दिल्ली-एनसीआर की हवा जहरीली बनने के पीछे कई कारण हैं। इनमें प्रमुख हैं पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कई इलाकों में फसल कटाई के बाद पराली जलाना आम बात है। इससे उठने वाला धुआँ हवा में घुलकर दिल्ली की सांसें रोक देता है। दूसरी वजह है दिल्ली में हर रोज़ लाखों वाहन सड़कों पर उतरते हैं।

डीज़ल गाड़ियों और पुराने वाहनों से निकलने वाला धुआँ प्रदूषण की बड़ी वजह है। तीसरी वजह है निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल और मलबा हवा में महीन कणों (PM 2.5 और PM 10) की मात्रा बढ़ा देते हैं। चौथी वजह है NCR के कई इलाकों में फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआँ बिना नियंत्रण के हवा में घुलता है। इन सबके बीच जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है और हर संस्था एक-दूसरे पर आरोप मढ़ देती है।

सांस लेना हो गया मुश्किल

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के आंकड़ों के मुताबिक, दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI) हाल ही में 400 से ऊपर दर्ज किया गया, जो “गंभीर” श्रेणी में आता है। इसका सीधा असर बच्चों, बुजुर्गों और फेफड़ों के मरीजों पर पड़ रहा है। दिल्ली के कई इलाकों जैसे आनंद विहार, वजीरपुर, जहांगीरपुरी और अक्षरधाम में AQI 370 से ऊपर रहा। विशेषज्ञों के मुताबिक, इस स्तर की हवा में लगातार रहने से सांस की बीमारियाँ बढ़ सकती हैं, सिरदर्द और आँखों में जलन जैसी समस्याएँ आम हो जाती हैं।

अक्टूबर में सुप्रीम कोर्ट ने दीवाली पर ग्रीन पटाखों की सीमित बिक्री की अनुमति दी थी। कोर्ट ने कहा था कि पारंपरिक उत्सव और पर्यावरणीय चिंताओं के बीच संतुलन जरूरी है। ग्रीन पटाखों को सिर्फ 18 से 20 अक्टूबर तक बेचने और तय समय में जलाने की अनुमति थी। सुप्रीम कोर्ट ने इस अनुमति को “टेस्ट केस बेसिस” बताया था।

यानी देखा जाएगा कि लोग कितनी जिम्मेदारी से इस नियम का पालन करते हैं। इसके साथ ही केंद्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को रोजाना हवा की स्थिति पर रिपोर्ट देने के निर्देश भी दिए गए थे।

सवालों के घेरे में प्रशासन

दिल्ली में हर सर्दी के मौसम में एक जैसी स्थिति बन जाती है। नवंबर आते ही हवा जहरीली हो जाती है, बच्चे स्कूल नहीं जा पाते, और मास्क फिर से ज़िंदगी का हिस्सा बन जाता है। लेकिन साल-दर-साल इस समस्या के लिए कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला जा सका। पर्यावरणविदों का कहना है कि प्रदूषण से निपटने के लिए दीर्घकालिक नीति की जरूरत है, न कि सिर्फ आपात उपायों की। प्रदूषण घटाने के लिए शहरों में पेड़ लगाना, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना, औद्योगिक उत्सर्जन पर सख्त नियंत्रण और कचरा प्रबंधन जैसे उपायों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

नागरिकों की भूमिका भी जरूरी

सिर्फ सरकार या अदालत ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों को भी अपनी भूमिका निभानी होगी। अगर लोग निजी वाहनों की बजाय सार्वजनिक परिवहन का ज्यादा इस्तेमाल करें, कचरा न जलाएं और बिजली की बचत करें, तो प्रदूषण के स्तर में बड़ा फर्क आ सकता है। दिल्ली के एक डॉक्टर का कहना है कि हवा अब सिर्फ पर्यावरण का नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य का मुद्दा बन गई है। हर सांस में ज़हर है, और अब हमें इसे गंभीरता से लेना ही होगा।

चेतावनी नहीं, कार्रवाई की जरूरत

सुप्रीम कोर्ट की यह सख्त टिप्पणी सिर्फ दिल्ली के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए एक चेतावनी है। जब देश की राजधानी ही सांस नहीं ले पा रही, तो छोटे शहरों और कस्बों का हाल क्या होगा? अब वक्त है कि सरकार, एजेंसियाँ और जनता मिलकर इस संकट से लड़ें। सिर्फ फाइलों में योजनाएँ बनाना काफी नहीं, ज़मीन पर दिखने वाले कदम उठाने होंगे।

आठवां वेतन आयोग तैयार: 18 हजार की सैलरी पर 33 हजार तक फायदा, पेंशन दोगुनी!

कैबिनेट का ऐतिहासिक फैसला: TOR पास, 1.2 करोड़ लोगों की सांस में सांस आई

केंद्र सरकार ने 28 अक्टूबर 2025 को आठवें केंद्रीय वेतन आयोग के लिए टर्म्स ऑफ रेफरेंस यानी काम का पूरा खाका मंजूर कर लिया। यह फैसला 50 लाख से ज्यादा केंद्रीय कर्मचारियों और करीब 69 लाख पेंशन लेने वालों के लिए एक नई सुबह जैसा है। जनवरी 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आयोग बनाने का वादा किया था, लेकिन अब कैबिनेट ने इसे हरी झंडी देकर असली शुरुआत कर दी। इस खाके में साफ लिखा है कि आयोग को देश की मौजूदा आर्थिक हालत, हर साल बढ़ती महंगाई, राज्य सरकारों पर पड़ने वाला वित्तीय बोझ, निजी कंपनियों में दी जाने वाली औसत तनखाह और सबसे अहम – पुरानी पेंशन स्कीम की मांग पर गहराई से सोचना होगा। सातवें वेतन आयोग की तरह यह आयोग भी बेसिक पे, महंगाई भत्ता, हाउस रेंट अलाउंस, ट्रेवल अलाउंस और दूसरे भत्तों में बदलाव सुझाएगा। कुल मिलाकर 1.2 करोड़ लोग इससे जुड़े हैं – सरकारी स्कूल के टीचर, अस्पताल के डॉक्टर, रेलवे के कर्मचारी, पोस्ट ऑफिस का चपरासी, सेना के जवान से लेकर आईएएस अधिकारी तक। यह सिर्फ सैलरी बढ़ाने की बात नहीं है, बल्कि पेंशन सिस्टम को मजबूत करने की भी है। कर्मचारी यूनियन सालों से पुरानी पेंशन स्कीम वापस लाने की मांग कर रही थीं, और अब TOR में उसकी जगह देखकर वे खुश हैं। सरकारी खजाने पर करीब 7 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का अतिरिक्त खर्च आएगा, लेकिन इससे कर्मचारियों की जेब गर्म होगी और बाजार में पैसा घूमेगा, जिससे अर्थव्यवस्था को फायदा होगा। दिवाली के ठीक बाद आया यह फैसला जैसे कर्मचारियों के लिए असली पटाखा फूटा हो। आयोग को 18 महीने का समय दिया गया है – यानी अप्रैल 2027 तक रिपोर्ट देनी है, लेकिन सिफारिशें 1 जनवरी 2026 से लागू मानी जाएंगी। इसका मतलब है कि कर्मचारियों को बैंकडेट से एरियर यानी बकाया राशि भी मिलेगी। पिछले आयोगों में देरी हुई थी, लेकिन इस बार सरकार तेजी दिखाना चाहती है। राज्य सरकारें भी आमतौर पर केंद्रीय आयोग को फॉलो करती हैं, तो उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र जैसे राज्यों के लाखों कर्मचारियों को भी फायदा पहुंचेगा। कुल मिलाकर यह फैसला न सिर्फ तनखाह बढ़ाने बल्कि पूरे सरकारी तंत्र को नया जीवन देने वाला है।

तीन दिग्गजों की टीम: चेयरपर्सन से सेक्रेटरी तक, कौन क्या करेगा?

आठवें वेतन आयोग की कमान तीन अनुभवी और मजबूत लोगों के हाथ में है, जिनकी नियुक्ति से साफ है कि फैसले निष्पक्ष और व्यावहारिक होंगे। सबसे ऊपर हैं पूर्व सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई, जो अभी प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की चेयरपर्सन हैं। उनकी कानूनी समझ और निष्पक्षता आयोग को मजबूती देगी। वे मीडिया चलाएंगी, यूनियनों से बात करेंगी और अंतिम रिपोर्ट को आकार देगी। उनके साथ पार्ट टाइम



8वां वेतन आयोग

मेंबर के रूप में प्रोफेसर पुलक घोष हैं, जो आईआईएम बैंगलोर में पढ़ाते हैं। वे आर्थिक विशेषज्ञ हैं – महंगाई के आंकड़े, जीडीपी ग्रोथ, निजी क्षेत्र की सैलरी से तुलना और फिटमेंट फैक्टर का गणित यही संभालेंगे। तीसरे मेंबर हैं पंकज जैन, जो पेट्रोलियम मंत्रालय के सेक्रेटरी हैं। वे सरकारी बजट, नियम-कानून और प्रशासनिक प्रक्रिया का ध्यान रखेंगे ताकि सिफारिशें कागज पर न रह जाएं, बल्कि लागू हो सकें। यह तिकड़ी मिलकर तय करेगी कि न्यूनतम सैलरी कितनी हो, फिटमेंट फैक्टर क्या रहे, पेंशन में कितना इजाफा हो और पुरानी पेंशन स्कीम पर क्या फैसला हो। चेयरपर्सन का रोल सबसे अहम है, क्योंकि अंतिम हस्ताक्षर उनके होंगे। प्रोफेसर घोष आर्थिक मॉडल बनाएंगे – जैसे अगर महंगाई 8 फीसदी है तो कितनी वृद्धि जरूरी। पंकज जैन यह देखेंगे कि सरकारी खजाना कितना सह सकता है, ताकि फिस्कल डेफिसिट न बढ़े। कर्मचारी संगठन जैसे एनजेसीए और कन्फेडरेशन ऑफ सेंट्रल गवर्नमेंट एम्प्लॉयीज इस टीम से खुश हैं, लेकिन वे 3.0 से ज्यादा फिटमेंट फैक्टर की मांग कर रहे हैं। आयोग नवंबर 2025 से काम शुरू करेगा और देशभर के कर्मचारियों, विशेषज्ञों, राज्य सरकारों से राय लेगा। पिछले आयोगों में भी ऐसी टीम होती थी, लेकिन इस बार OPS और निजी क्षेत्र तुलना पर खास जोर है। कुल मिलाकर यह टीम आयोग को विश्वसनीय और संतुलित बनाती है, और उम्मीद है कि निचले स्तर के कर्मचारी, जो सबसे ज्यादा महंगाई की मार झेलते हैं, उन्हें सबसे ज्यादा फायदा मिले।

समयरेखा साफ: 2026 से फायदा शुरू, लेकिन देरी का डर भी

आयोग का काम नवंबर 2025 से शुरू होकर अप्रैल 2027 तक रिपोर्ट सौंपने का है, लेकिन सिफारिशें 1 जनवरी 2026 से लागू मानी जाएंगी। यानी कर्मचारियों

को बैंकडेट एरियर भी मिलेगा – महीनों का बकाया एक साथ या किस्तों में। अगर सब कुछ समय पर हुआ तो 2026 के मध्य तक नई सैलरी स्लिप आएगी। लेकिन अगर देरी हुई, जैसे पुराने आयोगों में 19 से 32 महीने लगे, तो यह 2028 तक खिंच सकता है। सातवें आयोग ने सिर्फ 6 महीने में काम निपटारा था, जो रिकॉर्ड था। इस बार TOR में कई नए मुद्दे जोड़े गए हैं – OPS, निजी क्षेत्र तुलना, यूनिकाइड पेंशन स्कीम – इसलिए थोड़ा समय लग सकता है। रिपोर्ट आने के बाद कैबिनेट मंजूरी लेगी, फिर नोटिफिकेशन जारी होगा। उस दिन से DA जीरो हो जाएगा, बेसिक पे बढ़ेगा, HRA शहर के हिसाब से 27%, 18%, 9% रहेगा लेकिन नई बेसिक पर गिना जाएगा। TA भी रिवाइज होगा। एरियर एकमुश्त या 2-3 किस्तों में मिलेगा। राज्य सरकारें आमतौर पर 6 से 12 महीने बाद अपनाती हैं। 2024 में DA 50% हो चुका था, जो अब मर्ज होकर नई बेसिक बनेगा। कर्मचारियों को धैर्य रखना होगा, लेकिन यूनियन सरकार पर प्रेशर डाल रही हैं कि जल्दी हो। कुल मिलाकर 2027-28 में जब भारी होने की पूरी संभावना है, लेकिन देरी से बचने के लिए आयोग को तेजी से काम करना होगा।

सैलरी में बमपर उछाल: फिटमेंट फैक्टर से 30-35% तक बढ़ोतरी, टेबल देखें

सबसे बड़ा सवाल – सैलरी कितनी बढ़ेगी? विशेषज्ञों का अनुमान है कि फिटमेंट फैक्टर 2.5 से 2.86 के बीच रहेगा, यानी 30 से 35 फीसदी की बढ़ोतरी। सातवें आयोग में यह 2.57 था। फिटमेंट फैक्टर बेसिक पे को गुणा करता है। जैसे 18,000 × 2.86 = 51,480। न्यूनतम बेसिक पे 18,000 से बढ़कर 45,000 से 51,480 तक जा सकता है। 50,000 वाली सैलरी 1.25 लाख से 1.43 लाख हो जाएगी। नीचे पूरी टेबल है:

पुरानी बेसिक सैलरी

फिटमेंट 2.5 पर नई
फिटमेंट 2.86 पर नई
कुल फायदा (लगभग)
DA+HRA जोड़कर कुल सैलरी
18,000
45,000
51,480
27,000-33,480
80,000+
35,000
87,500
1,00,100
52,500-65,100
1,50,000+
50,000
1,25,000
1,43,000
75,000-93,000
2,20,000+
1,00,000
2,50,000
2,86,000
1,50,000-1,86,000
4,00,000+

ये आंकड़े अनुमानित हैं। असल फायदा DA मर्ज, HRA, TA जोड़कर और ज्यादा होगा। लेवल 1 के कर्मचारियों को प्रतिशत में सबसे ज्यादा फायदा। यह बढ़ोतरी महंगाई से जूझते परिवारों के लिए सांस की तरह है। लेकिन याद रखें – ये सिर्फ अनुमान हैं, आयोग की रिपोर्ट ही अंतिम होगी।

पेंशनर्स की बल्ले-बल्ले: 25 हजार वाली पेंशन 62 हजार तक, OPS पर फैसला जल्द

पेंशन लेने वालों के लिए भी खुशखबरी। 25,000 रुपये वाली मासिक पेंशन 50,000 से 62,150 तक जा सकती है। यूनिकाइड पेंशन स्कीम (UPS) का फायदा अलग से। TOR में पुरानी पेंशन स्कीम (OPS) पर विचार करने का जिक्र है, जो 69 लाख रिटायर्ड लोगों की सबसे बड़ी मांग है।

OPS में पेंशन आखिरी सैलरी का 50% होती है, बिना कटौती। NPS में मार्केट रिस्क है। अगर OPS वापस आई तो रिटायर्ड लोग सबसे खुश। सरकारी खर्च बढ़ेगा, लेकिन बुजुर्गों की जिंदगी आसान होगी – दवाइयां, किराया, बच्चों की पढ़ाई।

कर्मचारी यूनियन कह रही हैं कि महंगाई के हिसाब से और ज्यादा बढ़ोतरी हो। लेकिन सरकार आर्थिक संतुलन बनाए रखेगी। कुल मिलाकर आयोग सबको ध्यान में रखकर फैसला लेगा।

पप्पू, टप्पू और अप्पू...

योगी ने बिहार में महागठबंधन पर बोला सीधा हमला

दरभंगा, मुजफ्फरपुर और सारण की रैलियों में बोले यूपी के मुख्यमंत्री, राम-जानकी और विकास का संदेश लेकर आया हूं, बंटेंगे नहीं तो बचेंगे

@ मनीष पांडेय

बिहार विधानसभा चुनाव अभियान के बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को राज्य में तीन बड़ी जनसभाएँ कीं। दरभंगा, मुजफ्फरपुर और सारण की इन सभाओं में योगी का तेवर तीखा रहा। उन्होंने विपक्षी दलों कांग्रेस, आरजेडी और सपा पर सीधा वार किया और कहा कि इंडी गठबंधन अब तीन नए बंदरों के साथ मैदान में है - पप्पू, टप्पू और अप्पू। योगी ने कहा, “महात्मा गांधी के तीन बंदर हमें सिखाते थे- बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो। लेकिन आज के इंडी गठबंधन के तीन बंदर उल्टा करते हैं। बुरा देखते हैं, बुरा बोलते हैं और बुरा सुनते हैं। पप्पू कुछ अच्छा बोल नहीं सकता, टप्पू कुछ अच्छा देख नहीं सकता और अप्पू सच सुन नहीं सकता। यही लोग बिहार में झूठ और भ्रम फैलाने का काम कर रहे हैं।”

“बंटेंगे तो कटेंगे नहीं, एकरहेंगे तो सेफ रहेंगे”

दरभंगा के केवटी में एनडीए प्रत्याशी मुरारी मोहन झा के समर्थन में सभा को संबोधित करते हुए योगी ने कहा कि बिहार को जात-पात में बांटने की साजिश फिर से हो रही है। उन्होंने जनता को चेताया कि बंटेंगे तो कटेंगे नहीं, लेकिन अगर एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे। बिहार को समृद्ध और सुरक्षित बनाना है, तो डबल इंजन की सरकार को बनाए रखना होगा। योगी ने बिहार और उत्तर प्रदेश की एकता का उल्लेख करते हुए कहा, “राम और जानकी के रिश्ते ने दोनों प्रदेशों को जोड़ा है। अब विकास का रिश्ता भी उतना ही मजबूत होना चाहिए।”

अमित शाह ने अनुच्छेद 370 हटाकर आतंकवाद का खात्मा किया

योगी ने अपने भाषण में कांग्रेस पर सबसे अधिक प्रहार किया। उन्होंने कहा कि “कांग्रेस गरीबों की योजनाओं का पैसा हड़प लेती थी। आज मोदी सरकार में गरीब को मुफ्त राशन, मुफ्त इलाज और पक्का घर मिल रहा है। आयुष्मान भारत योजना ने लाखों लोगों को राहत दी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने कश्मीर को हिंदू-विहीन बनाया था। मोदी जी और अमित शाह ने अनुच्छेद 370 हटाकर आतंकवाद का खात्मा किया। आज 27 साल बाद कोई फिल्मी सितारा वहां शूटिंग कर पा रहा है, यह नया भारत है।”

डबल इंजन सरकार से बदला बिहार का चेहरा

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बिहार में एनडीए सरकार ने विकास की गाड़ी को गति दी है। “पहले अयोध्या से दरभंगा आने में 16 घंटे लगते थे, आज



राम के विरोधियों को जनता जवाब दे- योगी

योगी आदित्यनाथ ने अपने संबोधन में धर्म और आस्था के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा कि राजद-कांग्रेस का एक साथी समाजवादी पार्टी है। ये तीनों राम के विरोधी हैं। कांग्रेस ने अदालत में हलफनामा देकर कहा कि भगवान राम हुए ही नहीं। सपा ने रामभक्तों पर गोलियां चलवाईं। आरजेडी ने रामरथ को रोका था। जो राम का विरोधी होगा, वह मां जानकी का भी विरोधी होगा। ये लोग हमारी आस्था से खेलते हैं। उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण अब किसी एक राज्य की नहीं, पूरे भारत की जीत है। योगी ने कहा कि मैं मिथिला की धरती पर आया हूं, जहां मां जानकी का आशीर्वाद है। जैसे अयोध्या में भव्य राम मंदिर बना, वैसे ही सीतामढ़ी में मां जानकी का मंदिर बनेगा।

लखनऊ से केवल 45 मिनट में मिथिला पहुंचा जा सकता है। राम-जानकी मार्ग तैयार हो रहा है। मखाना बोर्ड बनाकर मोदी जी ने मिथिला को पहचान दिलाई है। लाख की चूड़ियों को नई बाजार पहचान मिली है। उन्होंने कहा कि “सड़क, रेल, हवाई और जलमार्ग के जरिए बिहार अब बंगाल और उत्तर प्रदेश से सीधा जुड़ चुका है। दरभंगा एयरपोर्ट हल्दिया-पटना-अयोध्या मार्ग से जुड़ रहा है। यही डबल इंजन सरकार की ताकत है।”

“राहुल गांधी विदेश जाकर भारत को बदनाम करते हैं”

योगी ने कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व पर व्यक्तिगत हमला करते हुए कहा, “राहुल गांधी विदेश जाकर भारत की छवि खराब करते हैं। एनडीए सरकार के काम उन्हें दिखते नहीं। जिन लोगों के राज में बिहार में नरसंहार, जातीय दंगे और अपहरण होते थे, अब वही लोग विकास पर सवाल उठा रहे हैं।” उन्होंने कहा कि “राजद के शासनकाल में 70 से ज्यादा नरसंहार हुए। डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी कोई सुरक्षित नहीं था। अब हालात बदल चुके हैं। अब बिहार में विकास की बयार है, भय का माहौल नहीं।”

बिहार का पुराना मॉडल-रोड चोरी, तालाब चोरी, बूथ चोरी

मुजफ्फरपुर में रैली के दौरान योगी ने तंज कसते हुए कहा कि जातीय हिंसा, रोड चोरी, तालाब चोरी और बूथ चोरी -यही था आरजेडी का बिहार मॉडल। आज जब हम कानून-व्यवस्था मजबूत कर रहे हैं, ये लोग उसे ‘तानाशाही’ कहते हैं। लेकिन यूपी में हमने माफिया को जमीन दिखा दी है। बुलडोजर ने गुंडागर्दी को खत्म कर दिया है। योगी ने आगे कहा, “आज यूपी में अपहरण नहीं, दंगा नहीं, सब कुछ चंगा है। बिहार में भी वही रास्ता अपनाया होगा।”

“खानदानी लुटेरे, खानदानी माफिया”

योगी ने आरजेडी और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि बिहार में पहले सड़क मांगो तो कहते थे सड़क बनेगी तो पुलिस आएगी। यही था उनका शासन। इन खानदानी लुटेरों ने खानदानी माफियाओं को जन्म दिया। अब वे लोग फिर से वही अंधेरा लौटाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि “हमें ऐसे लोगों को रोकना है। ये जाति और धर्म के नाम पर लड़ने की कोशिश करेंगे। पर बिहार की जनता अब जाग चुकी है। जिनके शासन में अपहरण उद्योग था, वो अब विकास की

बात नहीं कर सकते।” योगी ने आगे कहा, “1992 से 2005 तक बिहार में शाम छह बजे के बाद सन्नाटा छा जाता था। पटना हाईकोर्ट को कहना पड़ा था कि बिहार में सरकार नहीं, गुंडे चला रहे हैं। 30 हजार से अधिक अपहरण के मामले दर्ज हुए थे। डॉक्टर, व्यापारी, बच्चे तक सुरक्षित नहीं थे। चारा घोटाले ने पूरे देश को शर्मिंदा किया। उन्होंने कहा कि आज स्थिति बदल चुकी है। अब बिहार में कोई माफिया शासन नहीं, बल्कि कानून का राज है।”

बिहार और यूपी का रिश्ता अटूट है- योगी

सारण की रैली में लोजपा प्रत्याशी प्रिंस पासवान के समर्थन में योगी ने कहा, “बिहार और यूपी का रिश्ता त्रेता युग से है -रोटी-बेटी का रिश्ता। मैं अयोध्या से मां जानकी का आशीर्वाद लेकर आया हूं। जो लोग राम और जानकी का विरोध करते हैं, वे भारत की संस्कृति का विरोध करते हैं। उन्होंने कहा, “अब बिहार को बुलडोजर नहीं, विकास का इंजन चाहिए। माफिया नहीं, मखाना चाहिए। झूठ नहीं, रोजगार चाहिए। बिहार चुनावी मैदान में योगी आदित्यनाथ ने फिर साबित किया कि वह बीजेपी के सबसे मुखर प्रचारक हैं।”

हिंसा का दोषी कौन?

यह बात सत्य प्रमाणित हो चुकी है कि पूरी दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति के संस्कार में हिंसा बढ़ रही है। हर आदमी जल्दी आक्रोश में आ जा रहा है उस आक्रोश के परिणाम स्वरूप या तो वह लड़ता झगड़ता है अथवा डिप्रेशन में आ जाता है दोनों ही स्थितियां घातक हैं। हमें गंभीरता से सोचना होगा कि इसका दोषी कौन है। यह बात प्रमाणित हो चुकी है की हिंसा का सबसे अधिक दोष मुस्लिम संस्कृति पर है और मुस्लिम संस्कृति के बाद इसका दोष साम्यवादी संस्कृति पर भी जाता है। यह दोनों ही हिंसा के समर्थक हैं लेकिन प्रश्न यह है कि इसमें हिंदू कहां खड़ा है। हिंदू को इस समस्या का समाधान करना चाहिए था। मैं मानता हूं कि 10 वर्ष पहले हमारी सरकारें साम्यवाद के साथ खड़ी थी या इस्लाम के साथ या दोनों के साथ। इसलिए समाज में हिंसा बढ़ती रही साथ ही हमारी राजनीतिक व्यवस्था ने व्यक्ति के सुरक्षा और न्याय की भी गारंटी नहीं दी इसलिए भी समाज में हिंसा बढ़ती रही लेकिन अब तो हम सरकार में हैं और अगर हिंसा बढ़ती है इसके लिए हम आप दोषी माने जाएंगे। हम हिंदू हैं और जो हिंदू किसी भी परिस्थिति में हिंसा का समर्थन करता है उसे या तो कम्युनिस्ट कहना चाहिए या मुसलमान कहना चाहिए वह हिंदू नहीं है क्योंकि वर्तमान समय में हम सरकार हैं ऐसी परिस्थितियों में मैं अपने धर्म गुरुओं से भी निवेदन करूंगा कि वे हिंदुत्व का अर्थ समझे सरकार पर भरोसा करें किसी भी परिस्थिति में बल प्रयोग का समर्थन न करें। क्योंकि यदि हिंसा बढ़ती है तो उसका दोष उन लोगों पर जरूर आएगा जो गेरुआ वस्त्र पहनते हैं और हिंसा का समर्थन करते हैं। या तो आपको अपने गेरुआ वस्त्र उतार दो या हिंसा का विरोध करो।

बजरंग मुनि

भारतीय नारी शक्ति की बड़ी जीत

@ अनुराग पाठक

भारतीय क्रिकेट इतिहास का यह वह अध्याय है, जो आने वाली पीढ़ियों को गर्व से भर देगा। 47 साल का लंबा इंतजार खत्म हुआ, जब भारत की बेटियों ने दुनिया के सामने तिरंगा लहराया और वनडे वर्ल्ड कप अपने नाम किया। यह जीत सिर्फ एक टूर्नामेंट की विजय नहीं, बल्कि भारतीय नारी शक्ति के उस अदम्य आत्मविश्वास की मिसाल है जिसने तमाम पूर्वाग्रहों, संदेहों और सीमाओं को पीछे छोड़ दिया।

महिला क्रिकेट टीम की यह सफलता उस युग में आई है जब देश में बेटियों को अवसर तो मिलते हैं, पर बराबरी का मंच अब भी अधूरा है। क्रिकेट जैसे खेल में, जहां पुरुषों की उपलब्धियों पर सुर्खियां अक्सर केंद्रित रहती हैं, वहीं हरमनप्रीत कौर की टीम ने वह कर दिखाया जो कई दशकों से सपना था। इस जीत में उन तमाम कोशिशों की गूंज है जो डायना एडुल्जी से लेकर मिताली राज और झूलन गोस्वामी जैसी दिग्गजों ने अपने समय में की थी।

यह वर्ल्ड कप जीत सिर्फ मैदान पर खेले गए 50 ओवरों की कहानी नहीं है। यह संघर्ष की एक पूरी यात्रा है। शेफाली वर्मा का प्लेयर ऑफ द फाइनल बनना उस युवा भारत का प्रतीक है जो असफलताओं से डरता नहीं, बल्कि उन्हें चुनौती में बदल देता है। एक साल पहले टीम से बाहर की गई शेफाली ने इस जीत को अपने प्रदर्शन से अमर बना दिया। वहीं दीप्ति शर्मा का पांच विकेट लेकर मैच पलटना यह दिखाता है कि भारतीय टीम अब केवल बल्लेबाजों पर निर्भर नहीं रही, बल्कि हर खिलाड़ी अपने स्तर पर मैच जिता सकती है।

हरमनप्रीत कौर की कप्तानी इस सफलता की सबसे अहम कड़ी रही। उन्होंने यह साबित किया कि नेतृत्व केवल रणनीति का नहीं, बल्कि विश्वास का नाम है। 2017 में इंग्लैंड से मिली हार की कसक उन्होंने अपनी टीम के अंदर जज्बे में बदल दी। 2025 का यह फाइनल उस अधूरी कहानी का समापन था जिसे भारतीय क्रिकेट की बेटियों ने 18 साल पहले शुरू किया था। भारत की यह जीत उन सभी बेटियों को प्रेरणा देती है जो छोटे शहरों और गांवों में खेल के मैदानों में अपने सपनों को आकार दे रही हैं। जब एक हरियाणा की लड़की शेफाली वर्मा विश्व कप फाइनल में 87 रन बनाकर और 2 विकेट लेकर इतिहास रच सकती है, तो यह बताता है कि प्रतिभा किसी सुविधा की मोहताज नहीं होती।

सवाल यह भी है कि क्या अब भारतीय समाज और खेल



संस्थान इस उपलब्धि को केवल उत्सव के रूप में देखेंगे, या इसे बदलाव की शुरुआत बनाएंगे? महिला खिलाड़ियों को बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, समान पारिश्रमिक, और पेशेवर प्रशिक्षण देने की दिशा में ठोस कदम उठाने की जरूरत है। अगर यह जीत केवल तिरंगे के सम्मान की नहीं, बल्कि लैंगिक समानता की भी प्रतीक बन जाए, तभी इसका वास्तविक महत्व स्थापित होगा।

यह भी गौर करने लायक है कि महिला वर्ल्ड कप की प्राइज मनी इस बार पुरुष वर्ल्ड कप से भी अधिक रही। यह आर्थिक समानता की ओर बढ़ते कदम का संकेत है। लेकिन असली समानता तब होगी जब महिला क्रिकेट के मैचों को पुरुष क्रिकेट की तरह दर्शक और मीडिया का समान समर्थन मिलेगा। भारत की इस जीत में एक गहरी सांस्कृतिक परत भी छिपी है। यह उस मानसिकता पर प्रहार है जो खेलों में महिलाओं की भूमिका को सीमित करती रही। आज जब हरमनप्रीत, स्मृति, दीप्ति और शेफाली जैसी खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का नाम ऊँचा कर रही हैं, तब यह जीत एक सामाजिक परिवर्तन की कहानी भी बन जाती है।

कपिल देव ने 1983 में भारत को पहली बार वनडे वर्ल्ड कप जिताया था। धोनी ने 2011 में वह गौरव दोहराया। और अब हरमनप्रीत कौर ने उस गौरवगाथा में महिला अध्याय जोड़ दिया है। यह जीत बताती है कि भारतीय क्रिकेट का भविष्य अब केवल पुरुषों के हाथों में नहीं, बल्कि उन बेटियों के हाथों में भी सुरक्षित है जो जुनून, साहस और मेहनत से इतिहास लिख रही हैं।

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की यह सफलता सिर्फ खेल की नहीं, बल्कि एक विचार की जीत है। यह उस विश्वास की जीत है कि अवसर और आत्मविश्वास मिल जाए, तो कोई सपना असंभव नहीं रहता। 47 साल बाद यह कप जब तिरंगे के साथ भारतीय बेटियों के हाथों में चमका, तब यह सिर्फ ट्रॉफी नहीं थी। यह सम्मान था, संघर्ष था, और यह संदेश भी कि अब कोई सपना महिला संस्करण नहीं होगा, हर सपना भारतीय होगा।

जुबानी तीर

“



तेजस्वी यादव (BJD नेता)

बिहार में अब महाजंगलराज बन चुका है। हर रोज़ केरल-गढ़ में गोली चल रही है, लेकिन प्रधानमंत्री इसे नहीं देख पा रहे। जब तक कानून व्यवस्था सुधरेगी नहीं, अपराधी खुलकर घूमेंगे।

“



पासवान (केंद्रीय मंत्री, LJP(RV))

अगर हमारी सरकार अपराधियों को संरक्षण देती होती, तो रात को जो कार्रवाई हुई, वह नहीं होती। हमारी सरकार साफ कहती है -हम किसी को नहीं बचाते और न बाँचेंगे।

चिराग

“



जायसवाल (भाजपा बिहार अध्यक्ष)

कानून अपना काम कर रहा है। राजनीति को इस मामले में कुछ कहने की जरूरत नहीं है। बिहार में कानून के राज का शासन है -जात-धर्म से ऊपर।

दिलीप कुमार



तेज दिमाग, शांत मन: याददाश्त बढ़ाने के आयुर्वेदिक तरीके

कहा जाता है — “जिसका मन स्थिर, उसका ध्यान गहरा; और जिसका ध्यान गहरा, उसकी याददाश्त अटूट।” आज की तेज रफ्तार ज़िंदगी में हम हर पल कुछ न कुछ नया सीखते हैं, पर भूलने की आदत हमारी सबसे बड़ी समस्या बन गई है। मोबाइल नंबर याद नहीं रहते, नाम भूल जाते हैं, और कभी-कभी तो ये भी याद नहीं रहता कि चाबी रखी कहाँ थी। आधुनिक जीवन की यही भागदौड़, तनाव और डिजिटल निर्भरता हमारी स्मरण शक्ति को कमजोर कर रही है। लेकिन भारतीय परंपरा में इसका हल सदियों पहले ही खोज लिया गया था — “आयुर्वेद।”

आयुर्वेद का दृष्टिकोण — मन, मस्तिष्क और स्मरण

आयुर्वेद के अनुसार, स्मरण शक्ति (Memory) तीन प्रमुख मानसिक गुणों पर निर्भर करती है — धृति (धैर्य), बुद्धि (समझ), और स्मृति (याद रखने की क्षमता)। जब ये तीनों संतुलित रहते हैं, तो व्यक्ति का मस्तिष्क तेज और एकाग्र रहता है।

आयुर्वेद कहता है कि “मन” केवल दिमाग में नहीं बल्कि पूरे शरीर में प्रवाहित होता है। इसलिए, अगर शरीर में त्रिदोष — वात, पित्त और कफ असंतुलित हो जाएँ, तो मानसिक शक्ति भी कमजोर हो जाती है।

आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ जो याददाश्त को धार देती हैं

1. ब्राह्मी (Bacopa Monnieri): ब्राह्मी को आयुर्वेद में “बुद्धिवर्धक” कहा गया है। यह मस्तिष्क की कोशिकाओं को पुनर्जीवित करती है, नर्व सेल्स के बीच संचार बढ़ाती है और तनाव को कम करती है।

उपयोग: रोजाना सुबह खाली पेट 1-2 चम्मच ब्राह्मी रस या 500 mg की कैप्सूल गर्म पानी के साथ ले सकते हैं।

2. शंखपुष्पी (Convolvulus pluricaulis): यह स्मरण शक्ति और मानसिक शांति दोनों को बढ़ाती है। बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक सबके लिए उपयोगी है।

उपयोग: शंखपुष्पी सिरप सुबह-शाम दूध या पानी के साथ लें।

3. अश्वगंधा (Withania somnifera): तनाव और चिंता, याददाश्त के सबसे बड़े दुश्मन हैं। अश्वगंधा न केवल तनाव को कम करती है बल्कि मस्तिष्क में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाकर फोकस को बेहतर बनाती है।

उपयोग: सोने से पहले गुनगुने दूध के साथ आधा चम्मच अश्वगंधा चूर्ण।

4. वचा (Acorus Calamus): वचा को आयुर्वेद में “मेधावर्धक” कहा गया है। यह मस्तिष्क में रक्त संचार को बढ़ाती है और थकान या आलस्य को



कम करती है।

उपयोग: सुबह थोड़ी मात्रा में शहद के साथ वचा पाउडर लें।

5. गिलोय (Tinospora cordifolia): गिलोय मस्तिष्क को डिटॉक्स करती है और इम्युनिटी बढ़ाती है। याददाश्त को बनाए रखने में मदद करती है क्योंकि यह शरीर में वात और पित्त को संतुलित रखती है।

ध्यान, प्राणायाम और नींद — स्मरण के तीन स्तंभ

ध्यान (Meditation): प्रतिदिन केवल 10 मिनट ध्यान करने से मस्तिष्क के “हिप्पोकैम्पस” क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन होता है, जो याददाश्त का केंद्र माना जाता है।

तकनीक: किसी शांत जगह पर बैठकर अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करें। मन के विचारों को आते-जाते देखें, उन्हें पकड़ने की कोशिश न करें।

प्राणायाम (श्वास अभ्यास): विशेषकर अनुलोम-विलोम और भ्रामरी प्राणायाम दिमाग में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते हैं, जिससे एकाग्रता और याददाश्त दोनों में सुधार होता है।

नियम: रोज सुबह खाली पेट 10-15 मिनट करें।

पर्याप्त नींद: 7-8 घंटे की नींद मस्तिष्क को

“रीसेट” करती है। नींद के दौरान ही स्मृतियाँ स्थाई होती हैं। देर रात तक मोबाइल देखने की आदत इस प्रक्रिया को बाधित करती है।

आहार जो मस्तिष्क को पोषण देता है

भीगे हुए बादाम: रोजाना सुबह 5-6 बादाम छीलकर खाएँ, इनमें ओमेगा-3 फैटी एसिड और विटामिन E होता है।

घी: देसी गाय का घी “ब्रेन टॉनिक” है। एक चम्मच घी रोज भोजन में शामिल करें।

अखरोट: इसे “ब्रेन फूड” कहा जाता है। आकार भी मस्तिष्क जैसा और असर भी वैसा ही।

तुलसी और शहद: मानसिक तनाव कम करते हैं और स्मरण शक्ति बढ़ाते हैं।

हरी सब्जियाँ, मूंग दाल, फल और दूध — ये तीनों वात-पित्त को संतुलित रखते हैं और मानसिक स्थिरता लाते हैं।

किन आदतों से बचना चाहिए?

देर रात तक मोबाइल या लैपटॉप पर स्क्रीन देखना बार-बार कैफीन या एनर्जी ड्रिंक का सेवन भोजन के तुरंत बाद नींद लेना लगातार नकारात्मक सोच या तनावपूर्ण माहौल इनसे न केवल याददाश्त घटती है बल्कि मानसिक थकान और अनिद्रा जैसी समस्याएँ भी जन्म लेती हैं।

प्राचीन सूत्र — “स्मरण शक्ति साधना”

आयुर्वेद में “स्मृति साधना” नामक एक विशेष अभ्यास बताया गया है। इसमें व्यक्ति सुबह सूर्योदय के समय बैठकर कुछ शांति मंत्र या बीज मंत्र का उच्चारण करता है जैसे —

“ॐ नमः शिवाय” या “ॐ गंगापतये नमः”

इन मंत्रों की ध्वनि कंपन (vibrations) मस्तिष्क की कोशिकाओं को सक्रिय करती हैं और मन को स्थिर करती हैं।

आधुनिक रिसर्च क्या कहती है?

AIIMS और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों में हुए शोध बताते हैं कि ब्राह्मी और अश्वगंधा जैसी जड़ी-बूटियाँ मस्तिष्क के serotonin और dopamine स्तर को संतुलित करती हैं, जिससे मूड, ध्यान और मेमोरी तीनों पर सकारात्मक असर पड़ता है। अमेरिका की एक clinical study में भी यह सिद्ध हुआ कि जिन लोगों ने 12 हफ्ते तक ब्राह्मी का सेवन किया, उनकी working memory में 20% तक सुधार देखा गया। तेज याददाश्त का मतलब केवल चीजें याद रखना नहीं, बल्कि मन को स्थिर और जागरूक रखना है। जब हम शरीर को सही भोजन, मस्तिष्क को शुद्ध विचार और मन को शांत वातावरण देते हैं — तभी याददाश्त दीर्घकालिक होती है।

श्री दयाराम भाई: कृष्ण प्रेम के रस भरे संत

दयाराम भाई का नाम-स्मरण होते ही हृदय में श्री राधाकृष्ण की तरस भक्ति प्रवाहित हो उठती है। रसना पर रसामृत की गंगा आलोलित हो उठती है। नयनों में श्री वृंदावन की केली-माधुरी समा जाती है। दयाराम भाई परम भागवत संत थे, महान भगवद्भक्त थे। उनकी मधुर वाणी भक्ति-साहित्य के इतिहास में अमिट सिंदूर की तरह चमकती है। वे गुजराती साहित्य के कर्णधारों में से एक हैं। जैसे मराठी भक्ति में तुकाराम ने नामदेव के अभिनव संस्करण के रूप में पांडुरंग विठ्ठल का गुणानुवाद गाया, वैसे ही गुजराती भक्ति में नरसिंह मेहता के नवीन सत्करण के रूप में दयाराम भाई ने कृष्ण लीला से अपनी वाणी तजली। श्री नंदनंदन का चरित्र चित्रण किया। उनका हृदय कृष्ण रस से परिपूर्ण था। गुजराती लोक-जीवन को उन्होंने भागवत प्रेम और दिव्य विरह के मधुर आनंद से मंडित किया। उनकी रसमयी स्थिति श्रीकृष्ण में लीन थी। नर्मदा तट पर जन्मे ये संत वल्लभकुल के चरणाश्रय से पुष्टिमार्ग को गौरव प्रदान करने वाले थे। वे वल्लभाचार्य के मत के परम रसवेत्ता थे। कवि, भक्त और संत का अलौकिक समन्वय थे वे। उनके भक्ति पूर्ण गरबो-पदों का गान कर गुजराती रमणियां आत्मविभोर हो उठती हैं। नरसिंह मेहता ने गुजराती काव्य-देवी का द्वार खोला, प्रेमानंद ने सौंदर्य-दर्शन कराया तो दयाराम भाई ने भक्ति प्रदान की। कृष्ण भक्ति की इस दिव्य ज्योति ने अशांत काल में भी हृदयों को आलोकित किया।

जन्म: नर्मदा तट पर कृष्ण भक्त का अवतरण

दयाराम भाई के जीवनकाल में राजनीति का क्षेत्र अशांत था। मुगल राजवंश अपने तीसरे पहर पर था। प्लासी के युद्ध से बंगाल और बिहार तथा उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी कंपनी की शक्ति बढ़ रही थी। पानीपत के तीसरे युद्ध से मराठा राजशक्ति को बड़ा धक्का लगा। मराठे विविध राजसभाओं में विभक्त हो गए। दिल्ली के पैर उखड़ गए। अवध के नवाब स्वतंत्र बादशाह हो गए। निजाम ने हैदराबाद में स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। ऐसी विकट परिस्थिति में भगवती नर्मदा के तट पर चाणोद ग्राम में दयाराम भाई ने जन्म लिया।

उनके पूर्वज नागर ब्राह्मण थे। कुल परम वैष्णव था। उसमें बड़े-बड़े विद्वान और भक्त जन्मे थे। पूर्व पुरुष राघव भट्ट विख्यात थे। उनके वंशज प्रभुराज जी बड़े विद्वान और भक्त थे। पत्नी महालक्ष्मी या राजकुंवर बाई थीं। प्रभुराम जी शांत, सुशील और सात्विक स्वभाव के थे। राजकुंवर बाई अष्टाक्षर मंत्र जपकर शेषशायी नारायण का नित्य दर्शन करती थीं। भगवान की कृपा से भाद्रपद द्वादशी, वामन द्वादशी को संवत् 1833 विक्रम में दयाराम भाई का जन्म सौभाग्यवती राजकुंवर ने दिया। उस समय वे मायके डमोई-दर्भावती में थीं। प्रभुराम नर्मदा तट पर चाणोद में रहते थे। माता-पिता के सत्चरित्र ने दयाराम के विकास

पर गहरा प्रभाव डाला। दयाशंकर या दयाराम भाई का पालन-पोषण उनकी देखरेख में हुआ।

बाल्यावस्था में एक ज्योतिषी आए। हस्तरेखा देखकर बोले, 'आपके घर बहुत बड़े भगवद्भक्त ने जन्म लिया है। वे असंख्य जीवों को श्रीकृष्ण की पदारविंद भक्ति देकर आपके कुल का यश विस्तार करेंगे। उनकी कृपा से असंख्य प्राणी कलि के प्रकोप से मुक्त होकर भक्ति के साम्राज्य में निवास करेंगे।' पिता की इच्छा थी कि दयाराम अधिक विद्या पढ़ें और पुष्टिमार्ग के सिद्धांतों के अनुयायी बनें। दयाराम ने पिता का स्वप्न साकार किया। नर्मदा के रम्य तट ने उनके हृदय में सात्विकता भर दी। शेषशायी भगवान के मंदिर की छांह में बैठकर वे नर्मदा के अप्रतिम सौंदर्य का निरीक्षण करते।

*‘अति शुभ गुर्जर माटी दक्षिण प्रयागरुचिर,
महातरित श्रीनर्मदा अति शुद्ध उत्तर तीर।
निकट निपट हूं चांडीपुरी विप्रन को शुद्ध थान,
जिहिं राजत हे सदा श्री शेषशायी भगवान सो पुरी
मध्य निवास कवि।’*

— प्राचीन काव्य माल

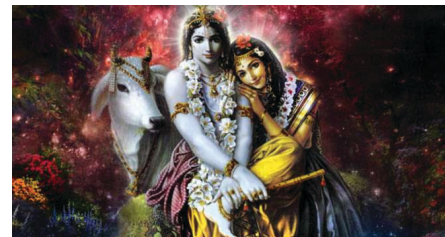
यह वर्णन उनके पवित्र जीवन पर प्रकाश डालता है।

बाल लीला: मंदिर सेवा और कृष्ण प्रेम का उदय

बचपन में दयाराम मां के साथ शेषशायी भगवान के मंदिर जाते। वे बड़े सुंदर, मृदुल और मधुर स्वभाव के थे। कभी पुजारी से कहते, 'महाराज, एक बार मुझसे भी भगवान की सेवा करा लीजिए।' पुजारी का उन पर स्नेह था। सेवा का अवसर मिलता। मंदिर से पान लेकर उछलते-कूदते घर आते। माता-पिता ऐसे भगवद्भक्त बालक को देखकर सौभाग्य की सराहना करते। भगवन्निष्ठा धीरे-धीरे बढ़ती गई। वे पद लिखकर प्रेम से भगवान को सुनाते।

भगवान शेषशायी की कृपा से नर्मदा तट को वैकुण्ठ रूप में देखा। नर्मदा की स्तुति की: 'हे नर्मदा, मैं आपकी शरण में हूँ। हे भवर्निदिनी, आपका दर्शन परम आनंद देता है। आप पतित पावनी और अधम उद्धारिणी हैं। ब्रह्मा आपका पार न पा सके। जो आपके निर्मल जल में स्नान करते हैं, उन्हें सकल पदार्थ प्राप्त होते हैं। मैं आपका दास हूँ, प्रेम से स्तवन करता हूँ।'

श्रीकृष्ण की लीला-कथाओं में बड़ा आनंद मिलता। विवाह की बात पर मां से कहा, 'मेरा संबंध श्रीकृष्ण से करना चाहिए।' रात-दिन कृष्ण प्रेम में डूबे रहते। सुख-दुख में कृष्ण लीला का ही अनुभव होता। पिता ने गंगा नाम की कन्या से विवाह कर दिया। दस साल के थे तभी गृहस्थी का भार कोमल कंधों पर आ गया। पिता प्रभुराम



स्वर्ग सिंधारे। घर में हाहाकार मच गया। पर दयाराम का भगवद्विश्वास अडिग रहा। उनकी दृढ़ धारणा थी:

*‘मूल कृष्ण इच्छा विना, डोले नहीं इक पात।
अभी दृढ़ चित्त राखिए, लाख बात की बात।।
सुख-दुख लाभ अलाभ सब, सहज होय मत रोय।
लिखी राख्यो नंदलाल सो मेदि सके न कोय।।’*

बाल्यजीवन अद्भुत था। प्रभु चरण कमलों में आत्मसमर्पण कर दिया। कृष्ण चिंतन-स्मरण में समय बिताने लगे। मां राजकुंवर के उपदेशों से वैराग्य की ओर बढ़े। भक्त कवियों के पद-भजन गाकर प्रभु को रिझाते। मां ने संसार की असारता समझाई, भागवत चेतना दी। दयाराम ने कृष्ण लीला वर्णन शुरू किया। वैकुण्ठवास की निष्काम याचना की, भक्ति मांगी।

इच्छाराम भट्ट की कृपा: भक्ति प्रचार की प्रेरणा

पत्नी के प्रति वैराग्य बढ़ा। गृहस्थ में वैराग्य भगवान की भक्ति का भूषण है। संसार से अनासक्त हो उठे। मां का देहावसान हुआ। भगवद्भजन के लिए स्वतंत्र हो गए। इच्छाराम भट्ट का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे भगवद्भक्त थे। समागम से कृष्ण भक्ति बढ़ी। आयु बढ़ने पर रसमयी भक्ति पुष्ट हुई। चेतना नवयुवती की तरह कृष्ण रस-केली में आसक्त हो उठी। यौवन काल परम रसमय था। काव्य-संगीत से भागवत रस अनुभव किया।

इच्छाराम भट्ट ने भागवत धर्म प्रचार की प्रेरणा दी। वे डाकोर रणछोड़ जी दर्शन को आते। एक बार दयाराम चाणोद से डभोई जा रहे थे। संयोग से इच्छाराम शेषशायी दर्शन के लिए चाणोद आए। वैष्णव मंडली में कथा कह रहे थे। दयाराम उपस्थित थे। कृपा दृष्टि पड़ी। भगवान गुणानुवाद की आज्ञा दी। कीर्तन-पद गान से प्रसन्न हुए। एकांत में कहा, 'तुम साक्षात् नरसिंह मेहता के अवतार हो। भगवान ने रसमयी भक्ति प्रचार के लिए भेजा है। उनके संबंध में पद रचो, भागवत धर्म विस्तार करो। तीर्थों में घूमो, सत्संग लाभ लो। जीवन सफल हो जाएगा।'

इच्छाराम की शिक्षा से पूर्ण भगवदीय आचरण अपनाया। मार्गशीर्ष-सावन में डाकोर जाकर रणछोड़ रायजी दर्शन और सत्संग करते।

विनम्रता और स्वाभिमान: संत के गुण

संत दयाराम के जीवन की विभूति विनम्रता थी।

मधुर-शांत स्वभाव के थे। डभोई में गायकवाड़ नरेश महाराजा फतहसिंह आए। दर्शन कर पद गाने को कहा। तानपूरे पर दो-तीन पद गाए। नरसिंह का 'वृषभानुसुता राधिका रहित वाधिका' गाया। फतहसिंह बोले, 'महाराज, आप साक्षात् नरसिंह मेहता हैं।' दयाराम ने विनम्रता से कहा, 'मैं तो उनके चरणों की धूलि हूँ—यही परम सौभाग्य है।'

बड़े स्वाभिमानी थे। श्रीकृष्ण में अव्यभिचारिणी रति थी। पेटलाद से नागर गृहस्थ मिलने आया। भगवत्तत्त्व विवेचना करने लगा। शैव था। बातों में शिव स्तुति में बहकर कृष्ण निंदा कर बैठा। दयाराम सहन न कर सके। शीलपूर्वक घर में चले गए। नागर को भूल का ध्यान आया, चला गया। आशुकिथ थे। कृष्ण भक्ति कविता की आधारशिला थी। आजीवन कृष्ण सुजान गाया। प्रेमरस की गंगा बहाई। नर्मदा का चिरंतन कलकल उनकी काव्य-गरिमा का प्रतीक है।

अंतिम लीला: गोलोक गमन का रसमय क्षण

अंतिम समय पूर्ण रसमय, भगवद्भय था। अंतिम पंद्रह दिनों के उद्गार करुण-हृदयद्रावक हैं। शिष्य वसंत राय तानपुरा बजाते, रणछोड़दास गाते। दयाराम मनोयोग से रसास्वादन करते। अवस्था बिगड़ने पर वैद्य बुलाया। बोले, 'महाराज, ऐसी दवा दो जिससे मरण-भय चला जाए। दुख-सुख सहना शरीर का धर्म है।' तानपुरा लेकर स्वयं भजन गाया: 'हे मन, अपने प्रियतम के देश में चलना चाहिए।'

गोलोक प्राप्ति के आठ दिन पहले अंत्येष्टि विधि समझा दी। अंत समय में रणछोड़दास ने पद गाया: 'हे मन, अंत समय है, असावधान होकर सोना नहीं चाहिए।' दयाराम बोले, 'भाई, मैं तो सावधान था।' दूसरा पद:

*‘मारा अत समे अलवेला मुजने मूकशो मा।
दर्शन दो नीरे दास ने मारा गुणनिधि
गिरिधरलाल।।’*

संवत् 1909 विक्रम, माघ वदी पंचमी को प्रभात काल में कृष्ण स्मरण कर गोलोक गए। अंत में रमण रेती, यमुना जल और श्रीनाथ जी की गाय के गोबर का उपयोग हुआ। वे परम रसिक, महान भगवदीय, विलक्षण संत थे।

रचनाएँ: कृष्ण रस का अमर भंडार

दयाराम भाई ने रसिकवल्लभ, अद्भुत मंजरी, वृंदावन विलास, सारावली, ग्रंथ तथा अनेक सरस गरबो की रचना की। इन रचनाओं में कृष्ण लीला का रस अनुभव होता है। गरबो-पदों में राधाकृष्ण प्रेम की माधुरी लहराती है। ये रचनाएँ पुष्टिमार्ग की अमृत धारा हैं। गुजराती भक्ति को ये अमर बनाती हैं।

शराबबंदी पर एनडीए की खामोशी, विपक्ष का शोर क्यों? नीतीश का सपना जो अब बोझ बन गया है

बिहार में साल 2016 के अप्रैल महीने में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बड़ा ऐलान किया। उन्होंने पूरे राज्य में शराब पर पूरी तरह रोक लगा दी। ये फैसला महिलाओं की पुरानी मांग पर आधारित था। ग्रामीण इलाकों में औरतें सालों से कहती आई थीं कि शराब की वजह से घरों में मारपीट होती है, पैसे बर्बाद होते हैं और बच्चे भूखे रहते हैं। नीतीश जी ने इसे सुशासन का हिस्सा बताया और कहा कि बिहार को नशा मुक्त बनाएंगे। शुरू के दिनों में ये कदम बहुत पसंद किया गया। महिलाएं सड़कों पर निकलीं, रैलियां कीं और नीतीश कुमार की तारीफ की। लेकिन अब नौ साल बाद हालात बदल गए हैं। अवैध शराब का धंधा फूल रहा है। पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार पिछले कुछ सालों में 20,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का काला कारोबार हो चुका है। जहरीली शराब से 300 से अधिक लोग मर चुके हैं, जिनमें ज्यादातर गरीब परिवारों के लोग हैं। सरकार ने सख्त कानून बनाया, जिसमें शराब रखने या पीने पर भी जेल हो सकती है। नतीजा ये हुआ कि 12.79 लाख लोग गिरफ्तार हुए, जिनमें 85 प्रतिशत से ज्यादा अनुसूचित जाति, अति पिछड़ा वर्ग और पिछड़े समुदाय के हैं। कोर्ट में लाखों केस लंबित हैं और जेलें भरी पड़ी हैं। नीतीश कुमार ने एक बार कहा था, 'जो शराब पीएगा, वो मरेगा'। लेकिन अब ये बात खुद उनके लिए मुसीबत बन गई है। चुनाव में एनडीए इस मुद्दे से दूर भाग रहा है।

एनडीए की चुप्पी: वोट बैंक बचाने की रणनीति

एनडीए गठबंधन में बीजेपी और जदयू शामिल हैं। इस बार के चुनावी घोषणा पत्र में शराबबंदी का एक शब्द तक नहीं है। नेता मंच से विकास, रोजगार, सड़क और बिजली की बात करते हैं, लेकिन शराबबंदी पर मुंह बंद रखते हैं। वजह स्पष्ट है। ये मुद्दा उनके समर्थक वर्ग को नाराज कर सकता है। जेल में बंद ज्यादातर लोग गरीब पुरुष हैं, जो ग्रामीण इलाकों से आते हैं और पारंपरिक रूप से एनडीए को वोट देते हैं। अगर सरकार अपनी नाकामी स्वीकार करेगी, तो ये वोटर दूर हो जाएंगे। दूसरी तरफ महिलाएं अभी भी पाबंदी का समर्थन करती हैं। एक सर्वे में पाया गया कि 60 प्रतिशत से ज्यादा महिलाएं कहती हैं कि घर में शांति आई है और पैसे बच रहे हैं। लैसेट नाम की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका की स्टडी में भी घरेलू हिंसा के मामलों में कमी दर्ज की गई है। जदयू के प्रवक्ता नीरज कुमार कहते हैं, 'पुलिस की संख्या कम है और नेपाल की सीमा खुली हुई है, इसलिए अवैध शराब आ जाती है। लेकिन फायदे साफ दिख रहे हैं। स्वास्थ्य बेहतर हुआ है और अपराध कुछ कम हुए हैं।' बीजेपी नेता संतोष पाठक

बोले, 'ये कानून विधानसभा ने सर्वसम्मति से पास किया था। अब विपक्ष को बोलने का कोई हक नहीं है।' एनडीए जानबूझकर इस मुद्दे को दबा रहा है ताकि महिलाओं का वोट बना रहे और पुरुषों का गुस्सा शांत रहे। वो कहते हैं कि सुशासन और विकास ही असली मुद्दे हैं। लेकिन क्या ये चुप्पी लंबे समय तक चल पाएगी?

विपक्ष का हमला: समीक्षा और ताड़ी पर खास जोर

महागठबंधन में आरजेडी, कांग्रेस, वाम दल और अन्य पार्टियां हैं। इनका घोषणा पत्र शराबबंदी पर खुलकर बोलता है। वो कहते हैं कि कानून की पूरी समीक्षा होगी। ताड़ी पर लगी पाबंदी हटाई जाएगी और जेल में बंद हजारों गरीबों को तुरंत रिहा किया जाएगा। तेजस्वी यादव ने कई रैलियों में कहा, 'पासी समाज पीढ़ियों से ताड़ी बनाता और बेचता आया है। ये उनका पारंपरिक धंधा है। पाबंदी की वजह से हजारों परिवार बर्बाद हो गए।' पासी समुदाय दलित वर्ग का हिस्सा है और विपक्ष इसे लुभाने की कोशिश कर रहा है। कांग्रेस नेता भी यही बात दोहराते हैं कि कानून अमीरों को नहीं छूता, वो घर पर महंगी शराब पीते हैं, लेकिन गरीब जेल जाते हैं। जन सुराज पार्टी के नेता प्रशांत किशोर सबसे आगे हैं। उन्होंने वादा किया, 'सत्ता में आते ही 15 मिनट में शराबबंदी हटा देंगे। इससे राज्य को 28,000 करोड़ रुपये का सालाना राजस्व मिलेगा, जो शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च होगा।' वाम दलों के दीपांकर भट्टाचार्य ने इसे 'ढोंग' बताया और कहा कि पाबंदी की आड़ में पुलिस गरीबों को प्रताड़ित कर रही है। विपक्ष का निशाना साफ है- पुरुष वोटर, युवा, प्रभावित जातियां और आर्थिक नुकसान। वो पूछते हैं कि अगर पाबंदी इतनी अच्छी है तो राजस्व क्यों घटा? बेरोजगारी क्यों बढ़ी? ये हमला एनडीए के सुशासन मॉडल पर सीधा प्रहार है।

समाज का विभाजन: फायदे और नुकसान की जंग

शराबबंदी ने बिहार के समाज को दो खेमों में बांट दिया है। एक तरफ महिलाएं और बच्चे खुश हैं। उनके घरों में अब कम झगड़े होते हैं। पति का कमाया पैसा परिवार पर खर्च होता है। स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है क्योंकि पैसे बच रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट कहती है कि शराब से जुड़ी बीमारियां कम हुई हैं। लेकिन दूसरी तरफ पुरुष परेशान हैं। अवैध शराब बहुत महंगी है और अक्सर जहरीली निकलती है। पिछले साल सारण और सीवान में कई मौतें हुईं। पुलिस की सारी ताकत शराब पकड़ने में लगी है, जिससे चोरी, डकैती जैसे अपराध बढ़ गए हैं। विश्व स्तर पर देखें तो ऐसी सख्त

पाबंदी कभी सफल नहीं हुई। अमेरिका में 1920 से 1933 तक प्रोहिबिशन लागू था, लेकिन माफिया और अवैध कारोबार बढ़ गया। आखिरकार उसे हटाना पड़ा। गुजरात में भी शराबबंदी है, लेकिन वहां पर्यटकों और उद्योगों के लिए ढील दी जा रही है। बिहार में ताड़ी जैसे पारंपरिक पेय पर बैन से स्थानीय अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई है। किसान ताड़ के पेड़ काट रहे हैं। एनडीए इसे नैतिक और सामाजिक सुधार बताता है। विपक्ष आर्थिक नुकसान और सामाजिक अन्याय पर जोर देता है। जनता सोच में है- क्या नैतिकता ज्यादा जरूरी है या रोजी रोटी? ये मुद्दा महिलाओं और पुरुषों के बीच का भी हो गया है। गांवों में बहस चल रही है कि पाबंदी बनी रहे या इसमें बदलाव हो।

चुनावी नतीजे: शराबबंदी खनेगी गेम चेंजर?

बिहार विधानसभा चुनाव का पहला चरण 6 नवंबर को है, बाकी चरण जल्दी ही। एनडीए 225 से ज्यादा सीटें जीतने का दावा कर रहा है, लेकिन शराबबंदी पर चुप्पी जोखिम भरी है। अगर विपक्ष के वादे गरीब और युवा वोटों को जोड़ लें, तो नीतीश कुमार का सुशासन ब्रांड कमजोर पड़ सकता है। जन सुराज जैसी नई पार्टियां इस मुद्दे को हथियार बना रही हैं। प्रशांत किशोर की रैलियों में भीड़ बढ़ रही है। दूसरी तरफ एनडीए महिलाओं और विकास पर फोकस कर रहा है। मतदान के दिन जनता तय करेगी कि बिहार सूखा राज्य रहेगा या इसमें ढील मिलेगी। ये सिर्फ शराब का सवाल नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और कानून व्यवस्था का भी है। एनडीए को महिलाओं का भरोसा बनाए रखना है, विपक्ष को पुरुषों और प्रभावित वर्गों का गुस्सा धुनाना है। अंत में वोटर ही फैसला करेंगे कि नीतीश का सपना जारी रहे या नया रास्ता अपनाया जाए। बिहार की सियासत में शराबबंदी एक बड़ा सवाल बन चुकी है, जिसका जवाब मतपेटी देगी।



सारे चक्रों को जागृत किया गुरुदेव जी ने

जै से भगवान बुद्ध ने अपने अंदर जागृति पैदा की, अपना उत्थान किया और अपने सारे चक्रों को सक्रिय किया, वैसे ही उनके मन में भाव आया कि मुझे यह अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। उन्होंने इसे सारे संसार में फैलाया। आज सारा संसार इसका फायदा उठा रहा है, समझ रहा है। जो इसे पा गया, उसने परमात्मा को पा लिया। जिसने इसे नहीं समझा और भोगों में पड़ा रहा, वह वहीं का वहीं रह गया। उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया, सबको प्रदान कर दिया।

क्यों करते हैं बच्चे माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार

जब बच्चों को भगवान ने पैदा किया था तो सब कुछ ठीक-ठाक उन्हें दिया था। न आंख की प्रॉब्लम थी, न लीवर, हार्ट और किडनी की प्रॉब्लम थी। हमें पूर्ण पुरुष व स्त्री बनाकर पैदा किया था। लेकिन हम अपनी आदतों, अयोग्यताओं तथा बुरे स्वभाव की वजह से अपने शरीर और मस्तिष्क को खराब कर लेते हैं। अपनी इष्या की वजह से चेहरे को विकृत कर लेते हैं।

ये भावनाएं हम बड़ों को देखकर ग्रहण करते हैं। यह बड़ों का फर्ज होता है कि वे बुरी आदतें अपने बच्चों को न दें। बच्चे अपने बड़ों से सब सीखते हैं कि उनके बड़े, अपने बड़ों के साथ कैसा बर्ताव कर रहे हैं या बात कर रहे हैं। वे बच्चे अपने बड़ों से ही सीखकर माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करते हैं।

प्रलोभन के वश में पाठ नहीं करते

हमें करोड़ों वर्षों बाद मनुष्य योनि प्राप्त हुई है। इसमें जन्म-मरण के बंधन को कैसे खंडित करना है, यह हम सबके हाथ में है। जीवन में कई ऐसे पड़ाव आते हैं जिसमें प्रलोभन मिलता है कि छोड़ो पाठ में क्या रखा है, जीवन का आनंद उठाओ। युवावस्था आती है जब हमें हर चीज आकर्षित करती है। आपने इन पड़ावों से कैसे बाहर आना है, वह आप केवल पाठ के द्वारा जान सकते हैं। हमें परमात्मा से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी बुद्धि को ठीक करो, हमारी वाणी को ठीक करो, हमारे शरीर को ठीक करो ताकि हम दुर्गा सप्तशती, मृत संजीवनी कवच, गणेश भास्कर, श्रीकृष्ण जी, श्री राम जी का पाठ कर सकें और तर जाएं।

पुरुष को भी स्त्री बनना पड़ता है

हम अपने खानपान और सोच को पाठ के द्वारा बदल सकते हैं। शुरू में कठिनाई आ सकती है, पाठ में मन नहीं लगता। आपका ही नहीं हमारा भी मन नहीं लगेगा, मन विचलित होगा। मन करेगा कि उठें और भागें, कुछ और करें। लेकिन धीरे-धीरे एक दो सप्ताह बीत जाने पर आपको इच्छा जगेगी, आपको ऐसा लगेगा कि यदि हमने यह पाठ नहीं किया, भक्ति नहीं की तो हमारे जीवन के चौबीस घंटों में कुछ छूट गया है। आप इसके इतने आदी हो जाएंगे कि पाठ के बिना आप एक पल भी रह नहीं पाएंगे। यह आपके स्वभाव को बदलना शुरू कर देगा। आप में ममत्व लाएगा। ममत्व केवल औरतों में ही नहीं होता, पुरुषों में भी होना चाहिए। क्योंकि स्त्री के अंदर ममत्व के भाव से जो भक्ति व भजन होता है वह एक मानवीय स्वभाव है, जो पुरुष में भी होना चाहिए। परमात्मा को पाने के लिए पुरुष को भी स्त्री बनना पड़ता है।

जब हट जाता है परमात्मा से विश्वास

हमारे जीवन में एक ऐसा समय



भी आता है कि जब हमारा विश्वास परमात्मा से हट जाता है। आपको गुस्सा आता है और हर चीज बेकार लगती है। जब हम पाठ करेंगे तो समय के साथ-साथ हमारी बुद्धि भी बदलेगी और अच्छा परिवर्तन आएगा, अच्छे विचार आएंगे। हम गुरुदेव जी की आज्ञा से भजन व वंदना के द्वारा अपने जीवन को संपूर्ण व सुंदर बना सकते हैं, जन्म-मृत्यु के बंधन को तोड़ सकते हैं।

स्वच्छता से बनेगी धरती स्वर्ग

आपने धरती को स्वर्ग बनाना है, प्रकृति को सुरक्षित रखना है तो अपने घर को साफ रखें। सोसाइटी तथा मस्तिष्क को साफ रखें। यदि मस्तिष्क साफ होगा, घर व गली भी साफ होगी।

आपकी पूरी सोसायटी साफ होगी। यह आप सबके हाथ में है कि प्रकृति को आप कैसे साफ रखें। भगवान शिव, पशुपतिनाथ हैं, मां दुर्गा साक्षात् प्रकृति है। लेकिन हम धरती को गंदा कर देते हैं। जब हम भगवान का पाठ करना शुरू कर देंगे तो हमारी प्रकृति अच्छी हो जाएगी और धरती भी अच्छी हो जाएगी।

अन्नपूर्णा देवी का करें सम्मान

अन्नपूर्णा देवी मां पार्वती का रूप है। हम उस अन्नपूर्णा देवी को प्रणाम करें, कि आप हमारे जीवन में आईं, हमें खाने का अवसर मिला, हमें खाना मिला और हमारा पेट भर सका। अन्नपूर्णा देवी जब हमारे शरीर में जा रही हैं, तो हमारे शरीर को सुख दें, समृद्धि दें, सारे रोगों को दूर करें और हमारे शरीर को जो अग्नि है, उसे जलाकर हमारे शरीर को सुंदर बनाएं। जब भी आप खाना पकाएं या खाएं, अपने आसपास के वातावरण को सुंदर बनाकर रखें। चलते-फिरते, लड़ते-झगड़ते, फोन पर बात करते हुए, आप भोजन को न खाएं, क्योंकि इससे भोजन का अपमान होता है। हम किसी भी मूड में खाना खा लेते हैं, चाहे हमें गुस्सा आ रहा हो, चिड़चिड़ापन आ रहा हो, चाहे हम फोन पर बात कर रहे हों। हम उस भोजन की वैल्यू ही नहीं करते। आप अन्न को जिस मूड से खाएंगे, वह अन्न आपको वैसा ही परिणाम देगा। अच्छे मूड और प्रेम से अन्न ग्रहण करेंगे तो उसका सकारात्मक असर आपके शरीर व व्यवहार में भी दिखाई देगा। इस धरती पर कितने ऐसे लोग हैं जिन्हें अन्न तक नहीं मिलता। हमें ये जो अन्न मिल रहा है, हम उसकी इज्जत करें, सम्मान करें, क्योंकि अन्नपूर्णा भी एक देवी हैं।



ही भगवान शिव का साक्षात्कार कर सकते हैं, इनमें ही सद्गुरु का रूप देख सकते हैं। इनसे वही आशीर्वाद मिलेगा जो भगवान शिव से मिलेगा।

अउम की ध्वनि हर जीव में है विद्यमान

एक बार मां पार्वती ने भगवान शिव जी से पूछा कि आपका सबसे प्रिय शब्द क्या है, जिसके द्वारा आप हर पल हर इंसान के बीच विद्यमान रहते हैं। भगवान शिव जी ने कहा कि वो 'अउम' की ध्वनि है, जो पूरे जगत को चला रही है, 'अउम' की इस ध्वनि के द्वारा ही मैं हर जीव में विद्यमान हूं। जब आप अऊम का उच्चारण करते हैं तो आप उस ओंकार शब्द के द्वारा परमात्मा को महसूस कर सकते हैं। सुनने में तो यह एक छोटा सा शब्द है, लेकिन इसमें इतनी शक्ति है कि आप इसके द्वारा कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं।

हर मनुष्य के भीतर है ज्योतिर्लिंग

कुल 12 ज्योतिर्लिंग हैं, जबकि सत्य तो यह है कि 12 नहीं बल्कि कुल 13 ज्योतिर्लिंग हैं। 13वां एक ज्योतिर्लिंग वह है जो हर इंसान के अंदर विद्यमान होता है, उसी 13वें ज्योतिर्लिंग को जगाने की हमारी इच्छा होनी चाहिए। वो ज्योतिर्लिंग पाठ के द्वारा, परमात्मा के नाम के द्वारा, अपने गुरु के नाम के द्वारा जगेगा। जब आपका गुरु आपके साथ होता है, तो वही उस अग्नि को जला सकता है, उठा सकता है। अग्नि आपको जला भी सकती है, अग्नि आपको प्रेम भी दे सकती है, अग्नि आपके अंदर की ज्योति भी जला सकती है। वो अग्नि ही है आपके पेट में, जो उस ओमकार को जगा सकती है। वो अग्नि ही है आपके अंदर, जो आपको जगा सकती है। क्योंकि अग्नि खत्म तो शरीर खत्म, वो अग्नि ही है जो आपको जगाएगी। तो परमात्मा का जो ये नाम है, ये जो ओमकार का नाम है, ये जो 'अऊम' का नाम है, ये जो गुरु ने हमको पाठ दिया है, उसका हम हमेशा सम्मान करें। ये जो ज्योतिर्लिंग हमारे अंदर है, हम उसको जगाएं। जब वो ज्योतिर्लिंग हमारे अंदर जगेगा, तो बाकी ज्योतिर्लिंगों का जब हम पाठ करेंगे, तब उस एक ज्योतिर्लिंग के साथ उन सब ज्योतिर्लिंगों का मिलाप होगा। हमारा एक अन्दर का ज्योतिर्लिंग और भगवान शिव के जो 12 ज्योतिर्लिंग हैं, तो एक-एक ज्योतिर्लिंग के साथ जब आपके अन्दर के ज्योतिर्लिंग का मिलन होगा, तो अपने आप में एक उर्जा उत्पन्न करेगा। जो साक्षात् आपको परमात्मा बनाएगा, साक्षात् आपको परमात्मा से मिलाएगा, जो साक्षात् आपको गुरु से मिलाएगा।

सेवादार भी गुरु की तरह सम्माननीय है

गुरु जी जहां चरण रख दें वहां की मिट्टी पावन हो जाती है तो ये सेवक भी उसी प्रकार माननीय हो जाते हैं। कहते हैं कि शिव को प्रसन्न करने के लिए उनके गण नन्दी को प्रसन्न करना पड़ता है। जो बात शिव तक पहुंचानी हो वह नन्दी के कान में कह दो, भगवान गणपति, मां पार्वती व भगवान कार्तिकेय तक प्रार्थना पहुंचा दो तो भगवान शिव तक स्वतः ही पहुंच जाएगी।

आपके परिवारजन तो हो सकता है कि आपकी बात काट दें लेकिन सेवादार कभी ऐसा नहीं करते। जब शिव के गण यहां पहुंच गए हैं तो साक्षात् शिव भी आपके बीच में हैं। आप शिव के गणों में



अनिल अंबानी की 3,000 करोड़ की 40 प्रॉपर्टीज जब्त, पाली हिल वाला आलीशान घर भी सील

मनी लॉन्ड्रिंग केस में अनिल अंबानी की दिल्ली से चेन्नई तक फैली 40 संपत्तियाँ अटैच, यस बैंक को हुआ 2,700 करोड़ का नुकसान

@ आनंद मीणा

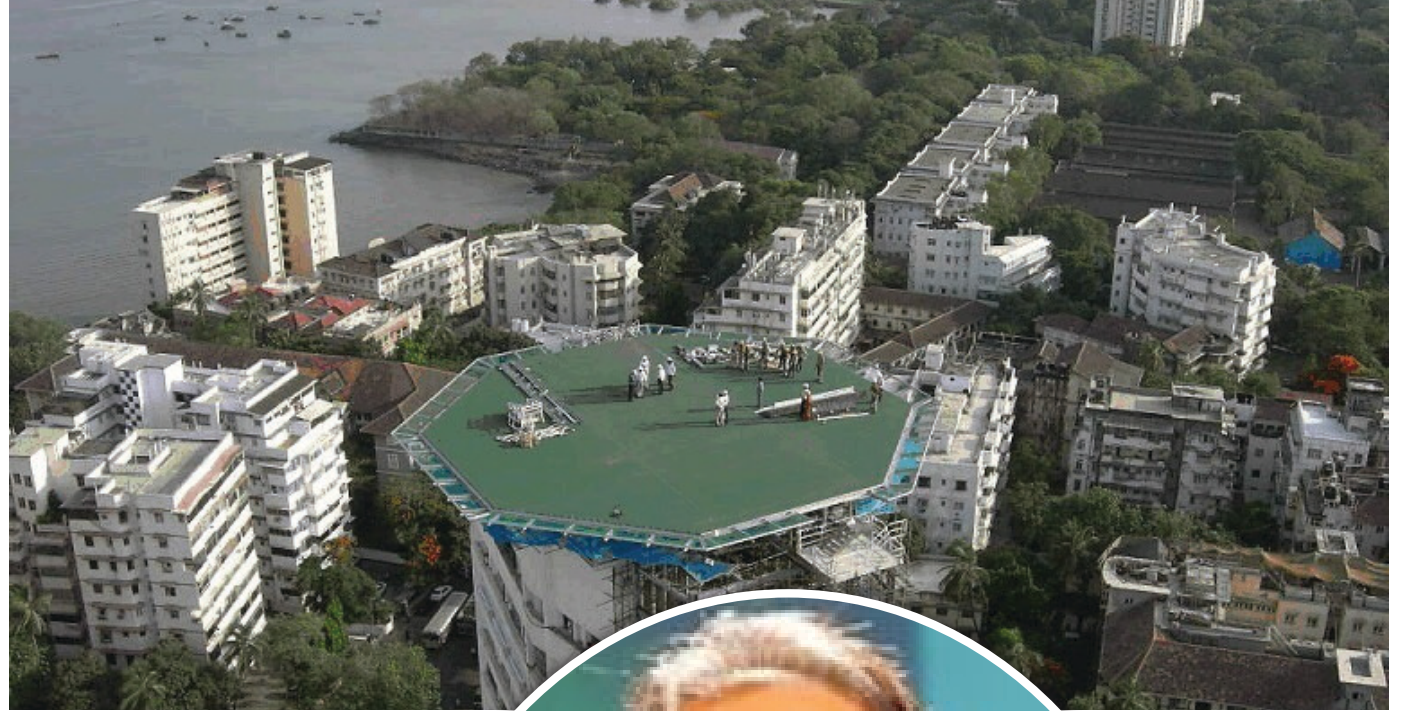
देश के कारोबारी जगत में हलचल मचाने वाली एक बड़ी कार्रवाई में प्रवर्तन निदेशालय ने अनिल अंबानी के रिलायंस ग्रुप से जुड़ी 40 से अधिक संपत्तियों को अटैच कर लिया है। इन संपत्तियों की कुल कीमत करीब 3,084 करोड़ रुपये बताई जा रही है। इनमें मुंबई के पाली हिल स्थित अनिल अंबानी का आलीशान बंगला 'अबोड' भी शामिल है। यह कार्रवाई मनी लॉन्ड्रिंग के उस मामले में की गई है जो यस बैंक से लिए गए लोन के कथित फंड डायवर्जन से जुड़ा हुआ है। ईडी का कहना है कि यह कदम पब्लिक मनी की रिकवरी और गैरकानूनी लेनदेन को रोकने के लिए जरूरी था।

ईडी की जांच में सामने आया है कि रिलायंस ग्रुप की दो कंपनियाँ, रिलायंस होम फाइनेंस लिमिटेड (RHFL) और रिलायंस कॉमर्शियल फाइनेंस लिमिटेड (RCFL) ने यस बैंक से लिए गए लोन का गलत इस्तेमाल किया। 2017 से 2019 के बीच यस बैंक ने इन दोनों कंपनियों में लगभग 5,000 करोड़ रुपये का निवेश किया था। इसमें RHFL को 2,965 करोड़ रुपये और RCFL को 2,045 करोड़ रुपये दिए गए थे। लेकिन दिसंबर 2019 तक ये रकम नॉन-परफॉर्मिंग एसेट (NPA) में बदल गई। बैंक को करीब 2,700 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। ईडी की जांच में खुलासा हुआ कि इन पैसों को रिलायंस ग्रुप की अन्य कंपनियों और फर्जी फर्मों में डायवर्ट कर दिया गया था।

जांच के दौरान यह भी सामने आया कि लोन अप्रूवल प्रक्रिया में भारी गड़बड़ी की गई। कई लोन ऐसे थे जो एक ही दिन अप्लाई, अप्रूव और डिस्बर्स कर दिए गए। जरूरी फील्ड विजिट और मीटिंग्स नहीं की गई। कई लोन दस्तावेज ब्लैंक या बिना तारीख के पाए गए। ईडी ने इसे इंटरनल कंट्रोल फेल्योर बताया, यानी जानबूझकर सिस्टम को कमजोर बनाकर फंड का गलत इस्तेमाल किया गया।

ईडी ने 31 अक्टूबर 2025 को प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (PMLA) की धारा 5(1) के तहत इन संपत्तियों को अटैच करने का आदेश जारी किया। अटैच की गई प्रॉपर्टीज दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, मुंबई, पुणे, ठाणे, हैदराबाद, चेन्नई, कांचीपुरम और ईस्ट गोदावरी जैसे शहरों में फैली हुई हैं। इनमें रिहायशी संपत्तियाँ, दफ्तर और जमीन के बड़े-बड़े टुकड़े शामिल हैं।

पाली हिल में स्थित अनिल अंबानी का घर अबोड इस अटैचमेंट में सबसे चर्चित संपत्ति है। यह घर देश के सबसे आलीशान रेसिडेंसेज में से एक माना जाता है। शुरुआत में इस इमारत को 150 मीटर ऊंचा बनाने की योजना थी, लेकिन जरूरी परमिट न मिलने के कारण इसकी ऊंचाई 66 मीटर रखी गई। इस घर में लक्जरी की हर सुविधा मौजूद है। हेलीपैड, जिम, स्विमिंग पूल, प्राइवेट लाउंज और विशाल कार पार्किंग। बताया जाता है कि यहां अनिल अंबानी की लगजरी कारों का बड़ा कलेक्शन है, जिसमें रोल्स रॉयस, पोर्शे, ऑडी, लेक्सस और मर्सिडीज जैसी कारें शामिल हैं। हालांकि 2020 में यूके की एक अदालत



में पेशी के दौरान अनिल अंबानी ने दावा किया था कि उनके पास अब केवल एक कार है और वे कर्ज में डूबे हुए हैं।

ईडी ने कार्रवाई क्यों की?

ईडी की कार्रवाई का केंद्र बिंदु 2017 से 2019 के बीच यस बैंक द्वारा अनिल अंबानी से जुड़ी कंपनियों को दिए गए लोन हैं। एजेंसी को शक है कि इन लोन का इस्तेमाल वास्तविक बिजनेस में नहीं, बल्कि रिलायंस ग्रुप की अन्य कंपनियों और फर्जी फर्मों में धन ट्रांसफर करने के लिए किया गया। ईडी का कहना है कि यह एक "सोचा-समझा आर्थिक चोरी" था, जिसमें बैंक अधिकारियों की भूमिका भी संदिग्ध है।

जांच में क्या सामने आया?

ईडी की जांच में कई गंभीर गड़बड़ियाँ उजागर हुईं। एजेंसी के अनुसार, कमजोर या बिना वेरिफिकेशन वाली कंपनियों को करोड़ों रुपये का लोन दिया गया। कई कंपनियों में एक ही डायरेक्टर और एक ही पता पाया गया। लोन से जुड़े जरूरी दस्तावेज या तो अधूरे थे या मौजूद ही नहीं थे। जांच में यह भी सामने आया कि पुराने लोन चुकाने के लिए नए लोन दिए गए। इसे लोन एवरग्रीनिंग कहा जाता है। इन सबके चलते यस बैंक को भारी नुकसान हुआ और निवेशकों का पैसा फंस गया।

यस बैंक के पूर्व सीईओ राणा कपूर का नाम भी शामिल

CBI ने भी इस मामले में दो एफआईआर दर्ज की हैं। एक रिलायंस होम फाइनेंस लिमिटेड और दूसरी रिलायंस



जनता के पैसे की सुरक्षा पर जोर

ईडी का कहना है कि यह कार्रवाई किसी व्यक्ति या कंपनी को निशाना बनाने के लिए नहीं बल्कि जनता के पैसे की सुरक्षा के लिए की गई है। एजेंसी अब यह पता लगाने में जुटी है कि इन कंपनियों के जरिए कितना फंड विदेशों में ट्रांसफर हुआ। ईडी के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक हर अवैध संपत्ति को ट्रेस किया जाए और उसे जब्त किया जाए, ताकि पब्लिक मनी सुरक्षित रहे। ईडी के अधिकारियों का कहना है कि अभी यह शुरुआती अटैचमेंट है। आगे जांच में और भी

कॉमर्शियल फाइनेंस लिमिटेड से जुड़ी। दोनों मामलों में यस बैंक के पूर्व सीईओ राणा कपूर का नाम शामिल किया गया है। सीबीआई की जांच में संकेत मिले कि रिलायंस ग्रुप को लोन देने में बैंक अधिकारियों और कंपनियों के बीच मिलीभगत थी। इस मामले में नेशनल हाउसिंग बैंक, सेबी, नेशनल फाइनेंशियल रिपोर्टिंग अथॉरिटी (NFRA) और बैंक ऑफ बडौदा जैसी संस्थाओं ने भी ईडी के साथ जानकारी साझा की है।

संपत्तियाँ जब्त की जा सकती हैं। यदि एजेंसी यह साबित कर देती है कि फंड का इस्तेमाल गैरकानूनी तरीके से हुआ, तो अटैच की गई प्रॉपर्टीज को स्थायी रूप से जब्त किया जा सकता है। अनिल अंबानी कभी देश के सबसे प्रभावशाली और चर्चित उद्योगपतियों में गिने जाते थे। लेकिन अब वही कारोबारी ईडी और अदालतों के घेरे में हैं। उनकी कंपनियों के पतन ने न केवल बैंकिंग सिस्टम की कमजोरियों को उजागर किया है बल्कि यह भी दिखाया है कि कोई भी व्यक्ति, चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, कानून से ऊपर नहीं है।

आगरा की बेटी दीप्ति शर्मा ने रचा इतिहास

संघर्ष से चमक तक, भारत को दिलाया पहला महिला वनडे वर्ल्ड कप

@ सौम्या चौबे

कभी छोटे से मैदान में श्रो मारने वाली एक लड़की ने आज पूरी दुनिया को दिखा दिया कि हिम्मत, मेहनत और लगन से कुछ भी नामुमकिन नहीं होता। आगरा की दीप्ति शर्मा ने अपने ऑलराउंड प्रदर्शन से भारत को आईसीसी महिला वनडे वर्ल्ड कप 2025 का खिताब दिला दिया। यह सिर्फ एक जीत नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के सपनों की उड़ान है। भारत ने फाइनल मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार महिला वनडे विश्व कप जीता। टीम इंडिया की इस ऐतिहासिक जीत की असली नायिका बनीं दीप्ति शर्मा, वो खिलाड़ी जिसने बल्ले और गेंद दोनों से विरोधियों को झुकाया।

शमशाबाद की मिट्टी से उठी एक सितारा

दीप्ति शर्मा का जन्म 24 अगस्त 1997 को उत्तर प्रदेश के आगरा जिले के शमशाबाद कस्बे में हुआ। उनके पिता भगवान शर्मा भारतीय रेलवे में कार्यरत थे, जबकि मां सुशीला शर्मा स्कूल की प्रधानाचार्या थीं। मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मी दीप्ति के लिए क्रिकेट चुनना किसी सपने जैसा था। उस वक्त लड़कियों का क्रिकेट खेलना समाज के लिए अजूबा माना जाता था। घरवालों को ताने सुनने पड़ते थे कि लड़कियाँ क्रिकेट नहीं खेलतीं, यह लड़कों का खेल है। लेकिन दीप्ति और उनके परिवार ने हार नहीं मानी। यही ज़िद एक दिन उन्हें भारतीय क्रिकेट की सबसे ऊँचाई पर ले आई।

एक शो जिसने बदल दी ज़िंदगी

दीप्ति की ज़िंदगी उस दिन बदल गई, जब उन्होंने पहली बार गेंद को हाथ में लिया। उनके बड़े भाई सुमित शर्मा, जो खुद उत्तर प्रदेश की अंडर-19 और अंडर-23 टीम से खेल चुके हैं, एक दिन प्रैक्टिस कर रहे थे। छोटी दीप्ति भी मैदान में पहुँच गई और शौकिया तौर पर गेंद फेंक दी। वो गेंद सीधे जाकर विकेट पर लगी। सुमित ने चौंकर बहन को देखा उन्हें एहसास हुआ कि इस लड़की में कुछ खास है। उस दिन से उन्होंने दीप्ति के क्रिकेट करियर को अपनी जिम्मेदारी बना लिया।

भाई ने छोड़ी नौकरी, बहन को बनाया खिलाड़ी

दीप्ति की सफलता के पीछे उनके भाई सुमित की मेहनत और त्याग भी उतना ही बड़ा कारण है। सुमित शर्मा ने अपनी नौकरी छोड़ दी ताकि दीप्ति की प्रैक्टिस में कोई बाधा न आए। उन्होंने कहा था कि जब मुझे पता चला कि दीप्ति को भारतीय टीम में जगह मिली है,

उस दिन समझ आया कि नौकरी छोड़ने का फैसला गलत नहीं था। सुमित रोज सुबह और शाम बहन को मैदान में ले जाते, नेट प्रैक्टिस करवाते और उन्हें मानसिक रूप से मजबूत बनाते रहे।

कड़ी मेहनत और आत्मविश्वास से बना सफर

दीप्ति ने महज नौ साल की उम्र में क्रिकेट खेलना शुरू किया। शुरुआत में उन्हें ना सही किट मिलती थी, ना अच्छी पिच। लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। दीप्ति कहती हैं कि शुरुआत में मैं अपने भाई के साथ लड़कों के बीच खेलती थी। वहाँ मुझे सिखाया गया कि खेल में फर्क नहीं पड़ता कि आप लड़की हैं या लड़का बस आपको अच्छा खिलाड़ी होना चाहिए। उनकी मेहनत रंग

लाई। 2014 में दीप्ति ने भारत की ओर से पहला वनडे मैच खेला। तब से अब तक वह चार टेस्ट, 86 वनडे और 104 टी-20 मैच खेल चुकी हैं। उनके बल्ले से 3300 से ज्यादा रन निकले हैं और गेंद से 229 विकेट गिरे हैं। यह आँकड़े खुद

बताते हैं कि वह भारत की सबसे भरोसेमंद ऑलराउंडर क्यों हैं।

बल्ला और गेंद दोनों से दिखाया कमाल

आईसीसी महिला वर्ल्ड कप 2025 के फाइनल में भारत ने दक्षिण अफ्रीका को हराकर इतिहास रचा। टॉस जीतकर दक्षिण अफ्रीका ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला

किया। भारतीय टीम ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर में 298 रन बनाए। दीप्ति शर्मा ने 58 गेंदों पर 58 रन की संयमित और जिम्मेदार पारी खेली। उनकी बल्लेबाजी ने भारत को मजबूत स्थिति में पहुंचाया। उन्होंने न सिर्फ रन बनाए, बल्कि साझेदारी भी संभाली। जो किसी भी बड़े मैच में जीत की कुंजी होती है। जब दक्षिण अफ्रीका की टीम लक्ष्य का पीछा करने उतरी, तो शुरुआती कुछ ओवरों में उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया। लेकिन दीप्ति की फिरकी के आगे उनके बल्लेबाज टिक नहीं सके। उन्होंने खतरनाक ओपनर लौरा वोल्वार्ट्ज़ को आउट किया और वहीं से मैच का पासा पलट गया। उनकी गेंदबाजी ने साउथ अफ्रीका की लय तोड़ दी और भारत को ऐतिहासिक जीत की ओर बढ़ा दिया।

आगरा में जश्न, परिवार में खुशी की लहर

जैसे ही भारत ने विश्व कप जीता, आगरा की गलियों में खुशी की लहर दौड़ गई। शमशाबाद में दीप्ति के घर के बाहर लोगों का तांता लग गया। मिठाइयाँ बंटी, ढोल-नगाड़े बजे और पूरा शहर बेटी की जीत में शामिल हो गया। दीप्ति के पिता भगवान शर्मा ने कहा, “बेटी ने जो ठाना, उसे पूरा किया। उसने कभी हार नहीं मानी, चाहे हालात कैसे भी रहे। मां सुशीला शर्मा की आँखों में खुशी के आँसू थे। जब लोगों ने कहा था कि लड़कियाँ क्रिकेट नहीं खेलतीं, तब हमने सिर्फ भगवान पर भरोसा रखा था। आज दीप्ति ने साबित कर दिया कि बेटियाँ किसी से कम नहीं।

महिला क्रिकेट के लिए नया दौर

भारत की इस जीत ने सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं जीती, बल्कि महिला क्रिकेट के एक नए युग की शुरुआत की है। अब लड़कियाँ सिर्फ सपने नहीं देखेंगी, बल्कि उन्हें पूरा करने की हिम्मत भी करेगी। दीप्ति शर्मा की कहानी हर उस लड़की के लिए प्रेरणा है जो किसी छोटे कस्बे से बड़े सपने लेकर निकलती है। उन्होंने साबित किया कि अगर ज़िद और मेहनत हो, तो मैदान चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, जीत हासिल की जा सकती है। दीप्ति का सफर किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं। मध्यमवर्गीय परिवार, सीमित संसाधन, सामाजिक ताने सब कुछ उनके रास्ते में था। लेकिन उन्होंने हर बाधा को पार किया। उन्होंने न केवल भारतीय टीम में अपनी जगह बनाई, बल्कि उसे विश्व चैंपियन भी बना दिया। मैच के बाद दीप्ति ने कहा, “यह जीत हर उस लड़की की है जिसने कभी अपने सपनों के लिए संघर्ष किया। मुझे हमेशा विश्वास था कि एक दिन भारत महिला वर्ल्ड कप जीतेगा। हमने ये सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए किया।” उनकी यह बात सिर्फ क्रिकेटर्स के लिए नहीं, बल्कि हर उस भारतीय के लिए एक प्रेरणा है जो कठिन हालात में भी आगे बढ़ना चाहता है।



पाकिस्तान कर रहा गुप्त परमाणु परीक्षण, अमेरिका भी करेगा टेस्ट ट्रम्प ने रूस और चीन पर लगाए गंभीर आरोप

@ रिकू विश्वकर्मा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया है कि पाकिस्तान, रूस और चीन गुप्त रूप से परमाणु परीक्षण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका को भी अब फिर से अपने परमाणु हथियारों की टेस्टिंग शुरू करनी होगी। ट्रम्प ने ये बयान रविवार को अमेरिकी चैनल CBS न्यूज को दिए एक इंटरव्यू में दिया। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका के पास इतने परमाणु हथियार हैं कि वह दुनिया को 150 बार नष्ट कर सकता है, लेकिन अब रूस और चीन की गतिविधियों के चलते नए परीक्षण जरूरी हो गए हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने रक्षा मंत्रालय (पेंटागन) को परमाणु हथियारों की टेस्टिंग शुरू करने का आदेश दे दिया है।

रूस, चीन और पाकिस्तान कर रहे हैं गुप्त टेस्ट - ट्रम्प

जब ट्रम्प से पूछा गया कि नॉर्थ कोरिया के अलावा कोई और देश तो खुले तौर पर परमाणु परीक्षण नहीं कर रहा, तो आप क्यों करना चाहते हैं? इस पर उन्होंने जवाब दिया कि रूस, पाकिस्तान और चीन भी गुप्त परीक्षण कर रहे हैं, बस दुनिया को पता नहीं चलता। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के पास इस बात के संकेत हैं कि ये देश भूमिगत या सीमित स्तर पर परीक्षण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर अन्य देश ऐसा कर रहे हैं, तो अमेरिका को पीछे नहीं रहना चाहिए।

"हमारे पास दुनिया के सबसे ताकतवर हथियार हैं"

ट्रम्प ने कहा, "अमेरिका के पास इतने परमाणु हथियार हैं कि हम पूरी दुनिया को कई बार नष्ट कर सकते हैं। लेकिन अब हमें अपने हथियारों की टेस्टिंग और मॉडर्नाइजेशन की जरूरत है।" उनका कहना था कि पिछली कई सरकारों ने इस दिशा में लापरवाही दिखाई, लेकिन अब समय आ गया है कि अमेरिका अपनी सामरिक क्षमता को फिर से जांचे और मजबूत बनाए।

रूस और चीन पर सीधे निशाना

ट्रम्प ने कहा कि रूस और चीन लगातार अपने परमाणु हथियारों को अपडेट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दोनों देश नई टेक्नोलॉजी पर काम कर रहे हैं, जबकि अमेरिका पिछले 30 साल से किसी भी तरह का परमाणु परीक्षण नहीं कर रहा। ट्रम्प ने कहा कि अगर वे टेस्ट कर रहे हैं, तो हमें भी करना होगा। हम सबसे मजबूत हैं और रहेंगे।

ताइवान पर चीन को चेतावनी

इंटरव्यू में ट्रम्प ने चीन और ताइवान के मुद्दे पर भी सख्त रुख दिखाया। उन्होंने कहा, "अगर चीन ने ताइवान पर हमला किया तो उसे इसके गंभीर नतीजे भुगतने होंगे। शी जिनपिंग जानते हैं कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो जवाब क्या होगा।" ट्रम्प ने दावा किया कि उनके पहले राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान चीन ने ताइवान पर कभी हमला करने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि वह जानता था



कि अमेरिका सख्त प्रतिक्रिया देगा। उन्होंने कहा, "शी जिनपिंग और मैं कई बार मिले हैं, उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया था कि जब तक मैं राष्ट्रपति हूँ, चीन ताइवान के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करेगा।"

पुतिन और शी जिनपिंग पर ट्रम्प की राय

जब ट्रम्प से पूछा गया कि पुतिन और शी जिनपिंग में से कौन अधिक मुश्किल नेता हैं, तो उन्होंने जवाब दिया, "दोनों कठिन हैं, दोनों स्मार्ट हैं। ये वो लोग नहीं हैं जिनसे खेला जा सके। ये गंभीर और मजबूत नेता हैं, मजाक के लिए नहीं बैठे होते।" ट्रम्प ने दोनों नेताओं की राजनीतिक समझ और निर्णायक क्षमता की सराहना की, लेकिन यह भी कहा कि अमेरिका को उनसे कहीं आगे रहना चाहिए।

परमाणु परीक्षण से हो सकता है बड़ा नुकसान

जहाँ ट्रम्प ने परमाणु परीक्षण का आदेश दिया है, वहीं अमेरिकी वैज्ञानिक इससे सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि आधुनिक तकनीक के जरिए बिना धमाका किए भी हथियारों की स्थिति और सुरक्षा की जांच की जा सकती है। यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना के अर्थशास्त्री कीथ मेयर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका में पहले हुए परमाणु परीक्षणों से निकले रेडिएशन की वजह से लगभग 6.9 लाख लोगों की मौत हुई या उनके स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ा। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर परीक्षण दोबारा शुरू किए गए, तो न केवल पर्यावरण पर बुरा असर पड़ेगा बल्कि अमेरिका की अंतरराष्ट्रीय साख भी कमजोर हो सकती है।

अमेरिकी सांसदों में बंटामत

अमेरिकी कांग्रेस में इस मुद्दे पर मतभेद हैं। कुछ सांसदों का कहना है कि अगर अमेरिका परीक्षण नहीं करेगा तो उसका परमाणु भंडार कमजोर पड़ सकता है। उनका तर्क है कि तकनीक बदल रही है और पुराने हथियारों की स्थिति जानने के लिए वास्तविक परीक्षण जरूरी हैं। दूसरी ओर, कई सांसद और वैज्ञानिक यह मानते हैं कि बिना धमाका किए हुए सिमुलेशन और आधुनिक तकनीकों से हथियारों की जांच की जा सकती है। उनका कहना है कि फिर से परीक्षण शुरू करने से वैश्विक तनाव बढ़ेगा और अन्य देश भी अपने परीक्षण तेज कर देंगे।

अमेरिकामें कब होगा अगला परमाणु परीक्षण?

अमेरिकी कांग्रेस की रिसर्च सर्विस की अगस्त की रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति के आदेश देने के बाद अमेरिका को परमाणु परीक्षण शुरू करने में लगभग 24 से 36 महीने लग सकते हैं। ट्रम्प ने यह नहीं बताया कि परीक्षण कब और कहाँ होंगे, लेकिन उन्होंने कहा, "हमारे पास साइट्स तैयार हैं। इसकी घोषणा जल्द की जाएगी।" उन्होंने आगे कहा, "मैं परमाणु निरस्त्रीकरण देखना चाहूंगा। हम इस बारे में रूस से बात कर रहे हैं, और अगर कुछ होता है तो चीन को भी शामिल किया जाएगा।"

पाकिस्तान पर आरोप के पीछे का संकेत

ट्रम्प का पाकिस्तान को लेकर बयान दक्षिण

एशिया की राजनीति में नया विवाद खड़ा कर सकता है। अब तक पाकिस्तान ने किसी नए परमाणु परीक्षण की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। 1998 के बाद पाकिस्तान ने कोई सार्वजनिक परमाणु धमाका नहीं किया है, लेकिन कई रिपोर्टें बताती हैं कि उसने अपने न्यूक्लियर प्रोग्राम को लगातार मजबूत किया है। ट्रम्प के इस बयान से यह भी संकेत मिलता है कि अमेरिका पाकिस्तान की गतिविधियों पर करीब से नजर रख रहा है। भारत के लिए यह बयान महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दक्षिण एशिया में परमाणु संतुलन पर असर डाल सकता है।

वैश्विक असर और आगे की चुनौती

विश्लेषकों का मानना है कि अगर अमेरिका ने परीक्षण दोबारा शुरू किए, तो दुनिया में नए परमाणु युग की शुरुआत हो सकती है। रूस, चीन और उत्तर कोरिया पहले से अपने हथियार भंडार को आधुनिक बना रहे हैं। अब अमेरिका की एंट्री से अन्य देश भी इस दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। ट्रम्प के आदेश से परमाणु निरस्त्रीकरण की दिशा में चल रही अंतरराष्ट्रीय कोशिशों को झटका लग सकता है। संयुक्त राष्ट्र ने पहले ही कहा है कि किसी भी प्रकार का नया परमाणु परीक्षण दुनिया को और असुरक्षित बना सकता है। ट्रम्प का बयान सिर्फ एक राजनीतिक वक्तव्य नहीं बल्कि एक नई रणनीतिक चुनौती है। पाकिस्तान और चीन पर गुप्त परीक्षण के आरोपों ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान फिर से परमाणु हथियारों की ओर खींच लिया है।

टूटी हुई बखिरी हुई चाय

टूटी हुई बखिरी हुई चाय
की दली हुई पाँव के नीचे

पतियाँ
मेरी कविता

बाल, झड़े हुए, मैले से रूखे, गिरे हुए, गर्दन से
फिर भी चिपके

...कुछ ऐसी मेरी खाल,
मुझसे अलग-सी, मिट्टी में

मिली-सी
दोपहर बाद की धूप-छाँह में खड़ी इंतज़ार की
ठेलेगाड़ियाँ

जैसे मेरी पसलियाँ...
खाली मेरी पसलियाँ...

खाली बोरे सूजों से रफू किए जा रहे हैं... जो
मेरी आँखों का सूनापन हैं

ठंड भी एक मुसकराहट लिए हुए है
जो कि मेरी दोस्त है।

कबूतरों ने एक गज़ल गुनगुनाई...
मैं समझ न सका, रदीफ़-काफ़िए क्या थे,

इतना ख़फ़ीफ़, इतना हलका, इतना मीठा
उनका दर्द था।

आसमान में गंगा की रेत आईने की तरह हिल
रही है।
मैं उसी में कीचड़ की तरह सो रहा हूँ

और चमक रहा हूँ कहीं...
न जाने कहीं।

मेरी बाँसुरी है एक नाव की पतवार—
जिसके स्वर गीले हो गए हैं,

छप्-छप्-छप् मेरा हृदय कर रहा है...
छप् छप् छप्।

वह पैदा हुआ है जो मेरी मृत्यु को सँवारने वाला
है।
वह दुकान मैंने खोली है जहाँ 'प्लाज़न' का
लेबुल लिए हुए

दवाइयाँ हँसती हैं—
उनके इंजेक्शन की चिकोटियों में बड़ा प्रेम है।

वह मुझ पर हँस रही है, जो मेरे लेंठों पर एक
तलुए
के बल खड़ी है

मगर उसके बाल मेरी पीठ के नीचे दबे हुए हैं
और मेरी पीठ को समय के बारीक तारों की
तरह

खुरच रहे हैं
उसके एक चुंबन की स्पष्ट परछाईं मुहर
बनकर उसके

तलुओं के ठप्पे से मेरे मुँह को कुचल चुकी है
उसका सीना मुझको पीसकर बराबर कर चुका
है।

मुझको प्यास के पहाड़ों पर लिटा दो जहाँ मैं
एक झरने की तरह तड़प रहा हूँ।

मुझको सूरज की किरणों में जलने दो—
ताकि उसकी आँच और लपट में तुम

फ़ौवारे की तरह नाचो।
मुझको जंगली फूलों की तरह ओस से टपकने
दो,

ताकि उसकी दबी हुई ख़ुशबू से अपने पलकों
की
उनींदी जलन को तुम भिगो सको, मुमकिन है
तो।

हाँ, तुम मुझसे बोलो, जैसे मेरे दरवाज़े की शर्माती
चूल्हें
सवाल करती हैं बार-बार... मेरे दिल के

अनगिनती कमरों से।
हाँ, तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मछलियाँ लहरों से
करती हैं

...जिनमें वह फँसने नहीं आती,
जैसे हवाएँ मेरे सीने से करती हैं

जिसको वह गहराई तक दबा नहीं पाती,
तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मैं तुमसे करता हूँ।

आईनो, रोशनाई में घुल जाओ और आसमान में
मुझे लिखो और मुझे पढ़ो।

आईनो, मुसकराओ और मुझे मार डालो।
आईनो, मैं तुम्हारी जिंदगी हूँ।

एक फूल ऋषा की खिलखिलाहट पहनकर
रात का गड़ता हुआ काला कंबल उतारता हुआ

मुझसे लिपट गया।
उसमें काँटे नहीं थे—सिर्फ एक बहुत

काली, बहुत लंबी जुल्फ़ थी जो ज़मीन तक
साया किए हुए थी... जहाँ मेरे पाँव

खो गए थे।
वह गुल मोतियों को चबाता हुआ सितारों को

अपनी कनखियों में घुलाता हुआ, मुझ पर
एक जिंदा इत्रपाश बनकर बरस पड़ा—

और तब मैंने देखा कि सिर्फ एक साँस हूँ जो
उसकी
बूँदों में बस गई है।

जो तुम्हारे सीनों में फाँस की तरह ख़ाब में
अटकती होगी, बुरी तरह खटकती होगी।

मैं उसके पाँवों पर कोई सिजदा न बन सका,
क्योंकि मेरे झुकते न झुकते

उसके पाँवों की दिशा मेरी आँखों को लेकर
खो गई थी।

जब तुम मुझे मिले, एक खुला फटा हुआ
लिफ़ाफ़ा
तुम्हारे हाथ आया।

बहुत उसे उलटा-पलटा—उसमें कुछ न था—
तुमने उसे फेंक दिया : तभी जाकर मैं नीचे

पड़ा हुआ तुम्हें 'मैं' लगा। तुम उसे
उठाने के लिए झुके भी, पर फिर कुछ सोचकर

मुझे वहीं छोड़ दिया। मैं तुमसे
यों ही मिल लिया था।

मेरी याददाश्त को तुमने गुनाहगार बनाया—
और उसका
सूद बहुत बढ़ाकर मुझसे वसूल किया। और तब

मैंने कहा—अगले जनम में। मैं इस
तरह मुसकराया जैसे शाम के पानी में

झूबते पहाड़ गमगीन मुसकराते हैं।

मेरी कविता की तुमने ख़ूब दाद दी—मैंने
समझा

तुम अपनी ही बातें सुना रहे हो। तुमने मेरी
कविता की ख़ूब दाद दी।

तुमने मुझे जिस रंग में लपेटा, मैं लिपटता गया :
और जब लपेट न खुले—तुमने मुझे जला दिया।

मुझे, जलते हुए को भी तुम देखते रहे : और वह
मुझे अच्छा लगता रहा।

एक ख़ुशबू जो मेरी पलकों में इशारों की तरह
बस गई है, जैसे तुम्हारे नाम की नब्बों-सी

स्पेलिंग हो, छोटी-सी प्यारी-सी, तिरछी स्पेलिंग।
आह, तुम्हारे दाँतों से जो दूब के तिनके की नोक

उस पिकनिक में चिपकी रह गई थी,
आज तक मेरी नौद में गड़ती है।

अगर मुझे किसी से ईर्ष्या होती तो मैं
दूसरा जन्म बार-बार हर घंटे लेता जाता :

पर मैं तो जैसे इसी शरीर से अमर हूँ—
तुम्हारी बरकत!

बहुत-से तीर बहुत-सी नावें, बहुत-से पर इधर
उड़ते हुए आए, घूमते हुए गुज़र गए

मुझको लिए, सबके सब। तुमने समझा
कि उनमें तुम थे। नहीं, नहीं, नहीं।

उनमें कोई न था। सिर्फ़ बीती हुई
अनहोनी और होनी की उदास

रंगीनियाँ थीं। फ़क़त।

शमशेर बहादुर सिंह

समादृत कवि-मधकार और अनुवादक।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित।

ऐपल का नया कीर्तिमान 4 ट्रिलियन डॉलर की ऊंचाई

दुनिया की मशहूर टेक कंपनी ऐपल ने एक बड़ा इतिहास रच दिया है। 28 अक्टूबर 2025 को कंपनी की कुल मार्केट वैल्यू पहली बार 4 ट्रिलियन डॉलर यानी 4 लाख करोड़ डॉलर से ज्यादा हो गई। ये आंकड़ा सुनकर हैरानी होती है क्योंकि ये रकम कई बड़े देशों की सालाना अर्थव्यवस्था से भी बड़ी है। ऐपल के शेयर की कीमत उस दिन 269 डॉलर तक पहुंच गई, जिससे कंपनी दुनिया की सबसे मूल्यवान कंपनियों में दूसरे नंबर पर आ गई। नेविडिया और माइक्रोसॉफ्ट के बाद ये तीसरी कंपनी है जो इतनी ऊंचाई पर पहुंची। लेकिन ये सफलता रातोंरात नहीं आई। iPhone 17 सीरीज की जबरदस्त बिक्री ने कंपनी को ये नई ताकत दी। नए फोन में बेहतर कैमरा, पतला बॉडी और स्मार्ट AI फीचर्स हैं, जो लोगों को बहुत पसंद आए। कंपनी के बॉस टिम कुक ने कहा कि ये उनकी अब तक की सबसे अच्छी iPhone रेंज है। लोग लाइन लगाकर फोन खरीद रहे हैं। लेकिन क्या ये तेजी हमेशा चलेगी? चीन जैसे बाजार में बिक्री कम हुई है, जो चिंता की बात है। फिर भी, ऐपल का ये सफर हमें बताता है कि नई सोच और मेहनत से बड़े सपने सच हो सकते हैं। निवेशक खुश हैं, लेकिन आगे की राह में कई सवाल भी हैं।

iPhone 17 की धमाकेदार शुरुआत: बिक्री ने तोड़े सारे रिकॉर्ड

ऐपल ने 9 सितंबर 2025 को iPhone 17 सीरीज लॉन्च की, जिसमें iPhone 17, iPhone 17 Pro, Pro Max और खास iPhone Air शामिल हैं। 19 सितंबर से बिक्री शुरू हुई और पहले ही हफ्ते में लाखों यूनिट्स बिक गए। iPhone Air सबसे पतला फोन है, जिसमें सेंसर में कैमरा और लंबी बैटरी लाइफ है। प्रो मॉडल्स में 5x ऑप्टिकल जूम और AI से चलने वाले टूल्स हैं, जो फोटो एडिटिंग को आसान बनाते हैं। कीमत 999 डॉलर से शुरू होती है, जो पुरानी सीरीज से थोड़ी ज्यादा है लेकिन फीचर्स इसे जायज ठहराते हैं। लॉन्च के बाद कंपनी के चौथे क्वार्टर के नतीजे शानदार रहे। 27 सितंबर तक खत्म हुए तीन महीनों में कुल कमाई 102.5 बिलियन डॉलर हुई, जो पिछले साल से 8% ज्यादा है। मुनाफा तो 86% बढ़कर 27.5 बिलियन डॉलर हो गया। एनालिस्ट्स कहते हैं कि AI पर सवाल उठ रहे थे, लेकिन ऐपल ने हार्डवेयर की ताकत से जवाब दिया। अमेरिका, यूरोप और भारत जैसे बाजारों में डिमांड बहुत है। लेकिन चीन में लोकल ब्रांड्स जैसे हुआवेई आगे निकल रहे हैं। क्या ऐपल वहां वापसी कर पाएगा? ये सीरीज दिखाती है कि ग्राहक अच्छी चीज के लिए पैसे देने को तैयार हैं। कुल मिलाकर, iPhone 17 ने बाजार को नई ऊर्जा दी है।

भारत की GDP से तुलना: कंपनी vs देश की अर्थव्यवस्था

सबसे रोचक बात ये है कि ऐपल की 4 ट्रिलियन



डॉलर वैल्यू भारत की 2025 की अनुमानित GDP के लगभग बराबर है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष यानी IMF के अनुसार भारत की GDP इस साल 4.13 ट्रिलियन डॉलर रहेगी। सोचिए, एक तरफ 140 करोड़ लोगों वाला देश जहां खेती, फैक्ट्री, सर्विसेज और ट्रेड से पैसा आता है, दूसरी तरफ सिर्फ 1.4 लाख कर्मचारियों वाली कंपनी। भारत की ग्रोथ रेट 6.6% है, जो दुनिया में सबसे तेज में से एक है। ऐपल ने 1976 में शुरू होकर महज 42 साल में 1 ट्रिलियन से 4 ट्रिलियन तक का सफर तय किया। भारत 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना चाहता है। ये तुलना हमें कई सवाल खड़े करती है। क्या एक कंपनी पूरे देश को पीछे छोड़ सकती है? शायद नहीं, क्योंकि भारत की ताकत उसकी बड़ी आबादी, युवा लोग और विविधता में है। ऐपल का पैसा मुख्य रूप से iPhone, Mac, iPad और सर्विसेज जैसे Apple Music से आता है। भारत में ऐपल स्टोर खोल रहा है और मैन्युफैक्चरिंग बढ़ा रहा है। लेकिन टैक्स, रेगुलेशन और लोकल कॉम्पिटिशन चुनौतियां हैं। ये उदाहरण बताता है कि टेक इनोवेशन से कितनी तेज ग्रोथ हो सकती है।

भारत के लिए ये सीख है कि डिजिटल और टेक सेक्टर पर फोकस बढ़ाएं तो GDP और तेज बढ़ेगी।

शेयर की 15% छलांग: लॉन्च के बाद का जादू

iPhone 17 लॉन्च होने के बाद ऐपल के शेयर में करीब 15% की तेजी आई। सितंबर में शेयर 238 डॉलर पर था, जो अक्टूबर में 269 डॉलर तक चढ़ गया। कई बड़े एनालिस्ट्स जैसे लूप कैपिटल ने रेटिंग बढ़ाई और टारगेट प्राइस 320 डॉलर रखा। चौथे क्वार्टर के नतीजों ने साबित किया कि सर्विसेज से रेवेन्यू रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा। Apple Watch, AirPods और Apple TV जैसे प्रोडक्ट्स भी अच्छा बिक रहे हैं। निवेशक AI में ऐपल के पीछे होने की बात कर रहे थे, लेकिन मजबूत बिक्री ने सबको चुप करा दिया। स्टॉक मार्केट में सेंटिमेंट बहुत मायने रखता है। लेकिन रिस्क भी कम नहीं। अमेरिका-चीन ट्रेड वॉर, नए कानून और सैमसंग, गूगल जैसे प्रतिद्वंद्वी दबाव बनाते हैं। माइक्रोसॉफ्ट और नेविडिया AI चिप्स में आगे हैं। ऐपल को Apple Intelligence को और बेहतर करना होगा। ये 15% उछाल दिखाता है कि अच्छे

प्रोडक्ट से कितना फायदा होता है। लेकिन निवेशकों को सावधान रहना चाहिए, क्योंकि मार्केट ऊपर-नीचे होता रहता है। लंबे समय में ऐपल का इकोसिस्टम मजबूत है।

भविष्य की दिशा: नई चुनौतियां और उम्मीदें

ऐपल का 4 ट्रिलियन डॉलर होना बड़ी उपलब्धि है, लेकिन आगे कई मुश्किलें हैं। AI की रेस में पीछे न रहें, चीन मार्केट में हिस्सा बढ़ाएं और नई चीजें जैसे ऑगमेंटेड रियलिटी ग्लासेस लाएं। भारत, वियतनाम में प्रोडक्शन बढ़ाकर सप्लाई चेन मजबूत करें। 2030 तक 10 ट्रिलियन वैल्यू का सपना दूर नहीं, अगर ग्राहक खुश रहें। लेकिन वैल्यूएशन ज्यादा होने से बुलबुला फूटने का डर है। रेगुलेटरी जांच, प्राइवसी मुद्दे और एनवायरनमेंट नियम परेशानी बढ़ा सकते हैं। निवेशक बैलेंस्ड तरीके से सोचें। भारत के लिए ये मौका है कि ऐपल जैसे टेक जायंट्स से सीख लें और अपना टेक सेक्टर बढ़ाएं। कुल मिलाकर, ऐपल की कहानी प्रेरित करती है कि लगातार नया करने से दुनिया बदल सकती है। भविष्य में और क्या होगा, ये देखना दिलचस्प रहेगा।

सोना-चांदी की कीमतों में आई भारी गिरावट, आम आदमी को मिला फायदा

भारत में सोना और चांदी की कीमतें हाल ही में रिकॉर्ड ऊंचाई छूने के बाद तेजी से नीचे आ गई हैं। 17 अक्टूबर 2025 को सोना 10 ग्राम के लिए 1,30,874 और चांदी 1 किलोग्राम के लिए 1,71,275 के अपने सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंचा था। लेकिन महज 13 दिनों में सोने की कीमत 10,246 तक गिरकर 1,20,628 प्रति 10 ग्राम रह गई, जबकि चांदी 25,675 सस्ती होकर 1,45,600 प्रति किलोग्राम बिक रही है। 31 अक्टूबर 2025 तक एमसीएक्स पर सोने का भाव 1,21,655 और चांदी का 1,48,650 के आसपास घूम रहा है। यह गिरावट निवेशकों और ज्वेलरी खरीदने वालों के लिए राहत की सांस है, खासकर दिवाली के बाद जब कीमतें आसमान छू रही थीं। शहरों में थोक भाव के अनुसार दिल्ली, मुंबई जैसे बड़े शहरों में 24 कैरेट सोना 10 ग्राम 1,21,470 और चांदी 1 किलो 1,50,900 के आसपास मिल रहा है। चेन्नई जैसे दक्षिणी शहरों में चांदी थोड़ी महंगी 1,64,900 तक है। यह तेज गिरावट बाजार की अस्थिरता को दिखाती है, जहां कुछ ही दिनों में लाखों रुपये का फर्क पड़ जाता है। आम परिवार जो शादी-ब्याह या निवेश के लिए सोना लेते हैं, उनके लिए यह अच्छा समय हो सकता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या कीमतें और नीचे जाएंगी या अब स्थिर हो जाएंगी? विशेषज्ञ कहते हैं कि वैश्विक कारक और घरेलू मांग इसकी कुंजी हैं।

पहली वजह: त्योहार खत्म, बाजार में खरीदार गायब



भारत दुनिया का सबसे बड़ा सोना-चांदी बाजार है, जहां दिवाली, धनतेरस जैसे त्योहारों पर खरीदारी चरम पर होती है। इस बार 17-18 अक्टूबर को धनतेरस पर रिकॉर्ड मांग ने कीमतों को आसमान पर पहुंचा दिया। लेकिन त्योहार बीतते ही खरीदारी का सिलसिला रुक गया। लोग अब जरूरी सामान पर खर्च कर रहे हैं, ज्वेलरी दुकानों पर ग्राहक कम हो गए। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार, सीजनल डिमांड खत्म होने से सप्लाई बढ़ गई और दाम गिरने लगे। पिछले साल भी ऐसा ही हुआ था, जब दिवाली बाद 5-7 फीसदी की गिरावट आई। इस बार गिरावट ज्यादा तेज है क्योंकि त्योहार से पहले कीमतें 50 फीसदी ऊपर चढ़ी थीं। छोटे व्यापारी बताते हैं कि स्टॉक ज्यादा होने से वे सस्ते दामों



पर बेच रहे हैं। यह घरेलू वजह सबसे बड़ी है, जो सीधे लाखों परिवारों को प्रभावित करती है। अगर चैत के त्योहार नजदीक आते ही मांग लौटे तो कीमतें संभल सकती हैं, वरना और गिरावट संभव।

दूसरी वजह: दुनिया में शांति के संकेत, सोने की सेप्टी कमजोर



सोना-चांदी को सेफ हैवन एसेट कहा जाता है, यानी मुश्किल वक्त में लोग इन्हें खरीदते हैं। लेकिन अक्टूबर 2025 में वैश्विक तनाव कम होने से इसकी चमक फीकी पड़ गई। अमेरिका और चीन के बीच ट्रेड वार की आशंका घट गई, राष्ट्रपति ट्रंप और शी जिनपिंग की बातचीत से ट्रेड डील की उम्मीद बनी। इससे निवेशक शेयर बाजार की ओर मुड़े। यूएस फेडरल रिजर्व ने व्याज दरें कटौती पर सतर्कता दिखाई, जिससे डॉलर मजबूत हुआ और सोने पर दबाव पड़ा। अंतरराष्ट्रीय बाजार में गोल्ड \$4,000 प्रति औंस से नीचे \$3,970 तक आ गया। भारत में रुपया भी थोड़ा मजबूत हुआ, जिससे आयात सस्ता पड़ा। जियोपॉलिटिकल रिस्क जैसे मिडिल ईस्ट टेंशन भी शांत

हो रहे हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब दुनिया स्थिर लगे, लोग रिस्की एसेट चुनते हैं। यह वजह बताती है कि सोना सिर्फ भारत की नहीं, पूरी दुनिया का मामला है। अगर नई अनिश्चितता आई तो उछाल आ सकता है।

तीसरी वजह: रिकॉर्ड तेजी के बाद मुनाफा वसूलने की होड़



साल भर की तेज रैली के बाद निवेशक प्रॉफिट बुकिंग में जुट गए। जनवरी से अक्टूबर तक सोना 50 फीसदी महंगा हो गया था, चांदी 70 फीसदी। तकनीकी चार्ट पर आरएसआई जैसे इंडिकेटर ओवरबॉट जोन में पहुंचे, जिसका मतलब बाजार ज्यादा गर्म था। बड़े फंड और ईटीएफ ने बिकवाली शुरू कर दी। एमसीएक्स पर ओपन इंटररेस्ट बढ़ा लेकिन प्राइस गिरा, जो बिकवाली का संकेत। दिवाली से पहले खरीदने वाले छोटे निवेशकों ने ऊंचे दाम बेचकर फायदा उठाया। ग्लोबल स्तर पर गोल्ड ईटीएफ से 5 महीने का सबसे बड़ा आउटफ्लो हुआ। यह सामान्य है, हर तेज चढ़ाई के बाद सुधार आता है। भारत में ज्वेलर्स ने भी स्टॉक क्लियर किया। यह वजह बाजार की सेहतमंद बनाती है, बुलबुला फूटने से बचाती है। अब

सवाल है कि बिकवाली थमेगी या जारी?

आगे का रास्ता: सस्ते दामों पर खरीदारी का मौका या और इंतजार?



यह गिरावट निवेशकों के लिए सोचने का समय है। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि लॉन्ग टर्म में सोना सुरक्षित है, इस साल अभी 30-40 फीसदी ऊपर है। आरबीआई की खरीदारी और महंगाई इसे समर्थन देगी। लेकिन शॉर्ट टर्म में फेड मीटिंग और ट्रेड न्यूज पर नजर रखें। अगर डॉलर कमजोर हुआ तो उछाल आएगा। सलाह है- बीआईएस हॉलमार्क वाला सोना ही लें, वजन-भाव चेक करें। छोटे अमाउंट में एसआईपी तरीके से खरीदें। ज्वेलरी लेने वालों के लिए अब अच्छा समय, लेकिन शादी सीजन नजदीक है तो जल्दी फैसला लें। बाजार अनिश्चित है, लेकिन इतिहास कहता है- गिरावट के बाद नई तेजी आती है। क्या आप खरीदेंगे या रुकेंगे? सोचिए।

ट्रम्प का परमाणु परीक्षण आदेश

33 साल बाद अमेरिका की नई दहाड़

ट्रम्प का अचानक फैसला और उसकी वजह

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने 30 अक्टूबर 2025 को एक बड़ा ऐलान किया। उन्होंने पेंटागन को आदेश दिया कि परमाणु हथियारों का परीक्षण तुरंत शुरू किया जाए। यह फैसला उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा। ट्रम्प ने कहा कि दूसरे देश अपने परमाणु कार्यक्रमों का परीक्षण कर रहे हैं, इसलिए अमेरिका भी बराबरी पर ऐसा करेगा। खास तौर पर उन्होंने रूस और चीन का नाम लिया। रूस ने हाल ही में न्यूक्लियर पावरड मिसाइलों और टॉरपीडो का परीक्षण किया है, हालांकि ये विस्फोटक परीक्षण नहीं थे। ट्रम्प का कहना है कि अमेरिका के पास दुनिया में सबसे ज्यादा परमाणु हथियार हैं, जो उनकी पहली राष्ट्रपति कार्यकाल में अपडेट किए गए थे। लेकिन अब बराबरी रखने के लिए परीक्षण जरूरी है। यह ऐलान दक्षिण कोरिया में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात से ठीक पहले हुआ। ट्रम्प ने डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस को “डिपार्टमेंट ऑफ वॉर” कहकर पुराने अंदाज में निर्देश दिया। हालांकि यह साफ नहीं है कि वे विस्फोटक परीक्षण की बात कर रहे हैं या सिर्फ मिसाइलों की उड़ान टेस्टिंग। अमेरिका 1992 से विस्फोटक परीक्षण नहीं कर रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर विस्फोटक परीक्षण शुरू हुए तो इसमें सालों लग सकते हैं और करोड़ों डॉलर खर्च होंगे। ट्रम्प का यह कदम व्यापार वार्ता और सुरक्षा मुद्दों के बीच आया है। इससे दुनिया में तनाव बढ़ने की आशंका है। अमेरिका CTBT संधि पर हस्ताक्षरकर्ता है, हालांकि इसे रेटिफाई नहीं किया। यह फैसला पुरानी मोरेटोरियम को तोड़ सकता है।

33 साल पुराना आखिरी परीक्षण: गहराई में पिघली चट्टानें

अमेरिका का आखिरी परमाणु परीक्षण 23 सितंबर 1992 को हुआ था। इसे “डिवाइडर” नाम दिया गया था। यह नेवादा टेस्ट साइट में अंडरग्राउंड शाफ्ट में किया गया। गहराई थी लगभग 1398 फीट। यील्ड 5 किलोटन थी। यह ऑपरेशन जूलिन का हिस्सा था, जिसमें 1991-92 में 7 परीक्षण हुए। डिवाइडर अमेरिका का 1054वां और आखिरी विस्फोटक परीक्षण था। अंडरग्राउंड परीक्षणों में बम को जमीन के नीचे गहराई में रखा जाता है। विस्फोट से इतनी गर्मी पैदा होती है कि आसपास की चट्टानें पिघल जाती हैं और कांच जैसी बन जाती हैं। इसे विट्रिफिकेशन कहते हैं। चट्टानें पिघलकर एक गुफा बना लेती हैं, जिसकी दीवारें कांच की तरह चमकदार हो जाती हैं। आम तौर पर परीक्षण 1000 से 6000 फीट की गहराई में होते थे ताकि रेडियोएक्टिव सामग्री बाहर न आए। कुछ पुराने परीक्षणों में गहराई 2000-3000 फीट के आसपास थी, जहां चट्टानें पूरी तरह पिघल गईं। 1992 के बाद अमेरिका ने मोरेटोरियम अपनाया। राष्ट्रपति जॉर्ज एचडब्ल्यू बुश ने सोवियत संघ के पतन के बाद यह रोक लगाई। तब से स्टॉकपाइल स्टीवर्डशिप प्रोग्राम से हथियारों की जांच होती है, बिना विस्फोट के। सिमुलेशन और सबक्रिटिकल टेस्ट



चलते हैं। लेकिन ट्रम्प का नया आदेश पुरानी यादें ताजा कर रहा है। क्या 2300 फीट की गहराई वाली कोई खास घटना थी? कुछ रिपोर्ट्स में अंडरग्राउंड टेस्ट की औसत गहराई ऐसी बताई जाती है, जहां रॉक मेल्टिंग आम थी। यह परीक्षण सुरक्षित रखने के लिए जरूरी था, वरना रेडिएशन फैलता। 33 साल बाद फिर शुरूआत की बात सोचने पर सवाल उठते हैं कि क्या पुरानी तकनीक दोहराना सही है।

दुनिया की मिली-जुली प्रतिक्रियाएं

ट्रम्प के ऐलान से दुनिया में हड़कंप मच गया। रूस ने कहा कि अगर अमेरिका परीक्षण शुरू करेगा तो हम भी करेंगे। क्रेमलिन प्रवक्ता दमित्री पेस्कोव ने याद दिलाया कि राष्ट्रपति पुतिन ने कई बार कहा है कि मोरेटोरियम टूटा तो रूस जवाब देगा। लेकिन रूस ने साफ किया कि उसके हाल के टेस्ट न्यूक्लियर विस्फोट नहीं थे। चीन ने अमेरिका से CTBT की जिम्मेदारी निभाने को कहा। चीनी विदेश मंत्रालय ने उम्मीद जताई कि अमेरिका परीक्षण रोक रखेगा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने इसकी निंदा की और कहा कि यह वैश्विक स्थिरता के लिए खतरा है। भारत और पाकिस्तान जैसे देश चुप हैं, लेकिन उत्तर कोरिया ने इसे अमेरिकी धमकी बताया। यूरोपीय देशों ने चिंता जताई कि इससे आर्म्स रेस शुरू हो सकती है। अमेरिका में ही डेमोक्रेट्स ने ट्रम्प की आलोचना की। विशेषज्ञ कहते हैं कि रूस-चीन ने 1990 और 1996 से विस्फोटक टेस्ट नहीं किए। उत्तर कोरिया आखिरी था। ट्रम्प का फैसला शायद रूस के न्यूक्लियर पावरड वेपन्स टेस्ट पर जवाब है। दक्षिण कोरिया को ट्रम्प ने न्यूक्लियर

सबमरीन तकनीक देने का वादा किया, जो क्षेत्रीय तनाव बढ़ा सकता है। भारतीय मीडिया में भी यह खबर छाई है, कुछ चैनल्स ने 33 साल पुरानी घटना जोड़कर बताया। कुल मिलाकर, एक तरफ डर है कि दुनिया फिर कोल्ड वॉर की ओर जाएगी, दूसरी तरफ कुछ कहते हैं कि यह सिर्फ दिखावा है। लेकिन सवाल यह है कि क्या बराबरी की यह दौड़ शांति लाएगी या तबाही।

फायदे और नुकसान: संतुलित नजरिया

ट्रम्प का फैसला कई कोणों से देखा जा रहा है। फायदा यह कि अमेरिका अपने हथियारों को मजबूत रखेगा और दुश्मनों को डराएगा। स्टॉकपाइल पुराना हो रहा है, परीक्षण से नई तकनीक चेक हो सकती है। रूस-चीन के बढ़ते आर्सेनल के जवाब में यह जरूरी लगता है। अमेरिका के पास 5000 से ज्यादा वारहेड्स हैं, लेकिन बिना टेस्ट के भरोसा कम हो सकता है। दूसरी ओर नुकसान ज्यादा हैं। विस्फोटक टेस्ट से रेडिएशन फैल सकता है, भले अंडरग्राउंड हो। नेवादा साइट पर पर्यावरण को नुकसान होगा। पानी और मिट्टी दूषित हो सकती है। CTBT टूटेगा, जो 1996 से है। इससे दूसरे देश भी परीक्षण शुरू कर सकते हैं। उत्तर कोरिया, ईरान को बहाना मिलेगा।

विशेषज्ञ कहते हैं कि सबक्रिटिकल टेस्ट और कंप्यूटर सिमुलेशन काफी हैं। अमेरिका को टेस्ट की जरूरत नहीं। यह फैसला ट्रेड वॉर में दबाव बनाने का तरीका भी हो सकता है। पर्यावरण कार्यकर्ता चिंतित हैं कि अंडरग्राउंड टेस्ट से भूकंप आ सकते हैं। स्थानीय लोग स्वास्थ्य जोखिम से डरते हैं। संतुलित नजर से, अगर सिर्फ

मिसाइल टेस्ट है तो कम समस्या, लेकिन विस्फोटक तो बड़ा खतरा। क्या यह सुरक्षा बढ़ाएगा या दुनिया को असुरक्षित बनाएगा? यह सोचने की बात है। अमेरिका अकेला नहीं, सभी देशों को संयम दिखाना चाहिए।

आगे की राह: अनिश्चितता और सवाल

ट्रम्प का आदेश दिया, लेकिन अमल कितना जल्दी? विशेषज्ञों के मुताबिक, नेवादा साइट बंद है, इसे तैयार करने में 2-3 साल लग सकते हैं। स्टाफ, उपकरण सब इकट्ठा करना पड़ेगा। अगर विस्फोटक नहीं, सिर्फ ICBM टेस्ट तो आसान है, अमेरिका नियमित करता है। लेकिन ऐलान से संकेत साफ है कि ट्रम्प आक्रामक नीति चाहते हैं। कांग्रेस की मंजूरी चाहिए, बजट पास होना पड़ेगा। रिपब्लिकन्स समर्थन कर सकते हैं, लेकिन विरोध भी होगा। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दबाव बनेगा कि अमेरिका रोक हटाए। CTBT में 187 देश हैं, अमेरिका ने साइन किया लेकिन रेटिफाई नहीं। रूस-चीन जवाबी कदम उठा सकते हैं। क्या यह नई आर्म्स रेस की शुरुआत है? या सिर्फ बातें? 1992 के बाद दुनिया शांतिपूर्ण मोरेटोरियम में थी। अब टूटने से क्या सभी देश सुरक्षित रहेंगे? ट्रम्प का पहला कार्यकाल याद करें, तो उत्तर कोरिया से बातचीत हुई थी। अब तनाव बढ़ रहा है। भारतीय नजरिए से, हमारा न्यूक्लियर प्रोग्राम डिटेरेंस पर है, लेकिन वैश्विक अस्थिरता असर डालेगी। अंत में, यह फैसला सोचने पर मजबूर करता है कि परमाणु हथियार शक्ति का प्रतीक हैं या विनाश का। शांति की राह बातचीत से है, परीक्षण से नहीं।



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries